विस्फोटक भविष्य
में
कलीसिया की
अगुवाई

अगुवाई करने वाले अगुवे

जीवन समूह अगुवों का प्रशिक्षण

Dynamic Churches
International

अतिरिक्त प्रतियों व जानकारी हेतु, सम्पर्क करें:
रेव्ह. पीटर कासुंग
निदेशक
लीडरशिप ट्रेनिंग सेन्टर
बाबूबासा, देवदंगा, चम्पासरी, पोस्ट ऑफिस - आंचल-734003,
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत

Publisher:
Dynamic Churches International
164 Stonegate Close, Airdrie, Alberta, Canada, T4B 2V2 (403) 912-4438
Email: dcimiddleton@shaw.ca **Website:** www.dynamicchurches.org

© 2008 Dynamic Churches International
All rights reserved. No part of this publication may be copied or reproduced in any form without written permission. Permission is given to copy forms in this book for personal use only.

Printed by Devtech Publishers and Printers Pvt. Ltd.
Email: devtech_printers@sify.com

विषय सूची

पृष्ठ

इस प्रशिक्षण कार्य-पुस्तिका का प्रयोग कैसे करें 1

परिचय 5

सत्र एक का मूल्याँकन 7
- कलीसिया का उद्देश्य 9
- कार्य विवरण 11

सत्र दो का मूल्याँकन 15
- आपके भविष्य के दरवाजे को खोलना 17

सत्र तीन का मूल्याँकन 23
- एक अगुवे का समर्पण 25
- प्रभावशाली लोगों की उपलब्धियों की प्रक्रिया 26

सत्र चार का मूल्याँकन 33
- शिष्य-निर्माण हेतू आत्मिक तैयारी 35
- एक विकासशील आत्मिक परिवार 38
- शिष्य निर्माण हेतू प्रक्रिया 39
- सिद्धता में बढ़ना एक प्रक्रिया है 42

सत्र पाँच का मूल्याँकन 43
- जीवन की कहानी कार्यशाला 46
- मित्रों की पार्टी के निर्देश 50

सत्र छः का मूल्याँकन 58
- अगुवाई के बुनियादी तत्व 60
- रिश्तों में एक नई एकता 61
- कैसे समूहों की अच्छी भागीदारी करें 63
- सेवकाई की ज़िम्मेदारियों का नक्शा 66

उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र 68

अगुवाई करने वाला अगुवा

इस प्रशिक्षण कार्य-पुस्तिका को प्रयोग कैसे करें

यह सत्र आपको प्रभावशाली ढंग से जीवन समूह चलाने, प्रत्येक समूह के सदस्यों को शिक्षा देने हेतु सुव्यवस्थित करने, तथा आपके नवअगुवों को अपने समूह की अगुवाई करने में सहायता करेंगे।

प्रत्येक सत्र प्रशिक्षक द्वारा अपने समूह के अगुवों को शिक्षा देने के लिए तैयार किया गया है:

> ***ध्यान दें:*** इस प्रशिक्षण को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक समूह अगुवे को नवअगुवों के प्रशिक्षण तथा नवअगुवों को प्रशिक्षण देना, पढ़े होना ज़रूरी है।

जीवन समूह अगुवे निम्नलिखित कार्य करें :

- अपने प्रशिक्षक व दूसरे समूह के अगुवों से मिलने से पूर्व, प्रत्येक सत्र को पढ़ें व तैयारी करें (प्रतिमाह एक दिन एक घण्टा)।
- एक साथ मिलकर पाठ्यक्रम पर चर्चा करें और निश्चय करें कि आपकी समझ व तालमेल स्पष्ट हो।
- इस्तेमाल करें। इनमें से बहुत से सिद्धान्त सामान्य तौर पर **समूह** में या **आपके व्यक्तिगत जीवन में** इस्तेमाल किये जायेंगे। कुछ सिद्धान्तों का निर्माण **समूह में शिक्षा देने के लिए किया गया है।** आपको या तो समूह में अपना समय देना होगा, या बाइबल अध्ययन समय का इस्तेमाल, बाइबल की इन सच्चाइयों को सिखाने के लिए करना होगा।

यह पुस्तक **कलीसिया की एक विस्फोटक भविष्य में अगुवाई** की श्रृंखला में से एक पुस्तक है। निम्नलिखित तथा अगला पृष्ठ दिखाता है कि किस प्रकार से **जीवन समूह के अगुवों का प्रशिक्षण, लोगों का निर्माण करने वाली सम्पूर्ण रणनीति** पर फिट बैठता है।

प्रशिक्षण पुस्तिकें	**के लिए प्रशिक्षण :**
1. विस्फोटक वृद्धि शिष्य निर्माणकारी-प्रक्रिया-कार्यशाला	- पास्टर व अगुवों की तत्वज्ञान व शिष्य-निर्माणकारी कलीसिया का विकास करने हेतु - किस प्रकार से पास्टर व अगुवों को एक से एक को तथा छोटे समूह की शिक्षा दी जा सके।
2. अगुवाई करना सीखना नवअगुवों के अगुवे का प्रशिक्षण	- जीवन समूह अगुवों को के लिए कि वह नवअगुवों के प्रशिक्षण में इसका इस्तेमाल करें।
3. अगुवाई करने वाला अगुवा जीवन समूह अगुवे का प्रशिक्षण	**- प्रशिक्षक, जीवन समूह अगुवों के प्रशिक्षण में इसका इस्तेमाल करें।**
4. एक विजयी दल प्रशिक्षकों का विकास व स्रोत	- पास्टर अपने प्रशिक्षकों का विकास करने के लिए इसका प्रयोग करें
5. सीमा से परे पहुँचना पासबान से पासबान को शिक्षा	- पासबान व अगुवे जो दूसरों की सहायता करना चाहते हैं, स्थानीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कलीसिया शिष्यनिर्माणकारी प्रक्रिया का विकास करें।

यह सारी सामग्री विपरीत पृष्ठ पर छपे हमारे कार्यालय के पते पर उपलब्ध है।

लोगों का निर्माण करने हेतु सम्पूर्ण रणनीति

कार्य	जीवन समूह	अगुवा व नवअगुवा	प्रशिक्षक व अगुवा	पासबान व प्रशिक्षक	कलीसिया से कलीसिया को प्रशिक्षण
1. स्वागत प्रेम बाँटना	एक दूसरे से जान पहचान करें	**मित्रता बढ़ाना**	कलीसिया व समाज के प्रति बोझ को बाँटना	लोगों तक पहुँचने के लिए सेवकाई के लिए दर्शन व चाहत का निर्माण करना	- सारे पासबानों से जान पहचान बढ़ायें - अपनी एकता को प्रोत्साहन दें - एक दूसरे की व एक दूसरे की कलीसिया की सेवा करें
2. अराधना गीत गाना, प्रार्थना व स्तुति	परमेश्वर की अराधना करें - एक दूसरे के लिए परमेश्वर की स्तुति करें	**परमेश्वर की अराधना करें निम्न बातों के लिए प्रभु की स्तुति करें:** **- एक दूसरे के लिए** **- समूह के सदस्यों के लिए** **- सुसमाचार सभा व वृद्धि** **- अवसरों**	परमेश्वर की अराधना करें और निम्न बातों के लिए प्रभु की स्तुति करें: - नवअगुवों के लिए - समूह सदस्यों हेतु - नये समूहों के जन्म हेतु प्रार्थना करें	परमेश्वर की अराधना व निम्न बातों हेतु प्रार्थना करें: - अगुवों - उसके भविष्य को दिशा - समाज के शुद्धिकरण हेतु - कलीसिया स्थापना व उसके बढ़ने हेतु	परमेश्वर की अराधना करें व निम्न बातों के लिए स्तुति करें: - हर दूसरे सेवक हेतु - एकता के लिए (कलीसिया) - फैलना / दूसरे कलीसिया को तैयार करना - शहर / पूरे इलाके की शुद्धि हेतु प्रार्थना की योजना
3. जीतना दूसरों तक पहुँचना	- उद्धार न पाये मित्रों हेतु प्रार्थना करें - मसीह का प्रचार करना सीखें - नये लोगों तक पहुँचने के लिए प्रार्थना करें	**समूह के सदस्यों को गैर मसीही लोगों में प्रचार करन के लिए तैयार करें व प्रार्थना करें।**	समूह व कलीसियाई तौर पर प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन	- शहरी स्तर व कलीसिया स्तर पर सुसमचार प्रचार की योजना बनायें - अन्य संस्कृतियों में सेवा - लघु समयकालीन सेवकाई की योजनाएं	- सहयोगी शहरों में प्रचार द्वारा सेवा निभाने की योजना बनायें व प्रयोग करें। - एक शहर को अपनायें/संसार में से एक देश को।
4. वचन सीखें/बाइबल अध्ययन योग्यता प्रशिक्षण	मसीही जीवन कैसे जिएं	**किस प्रकार से हम अपने समूह को बढ़ाएं और पुनः उत्पादन करें।**	अपने समूह की अगुवाई कैसे करनी है।	- दर्शन को फैलायें - महान आज्ञा को पूर्ण करने के लिए-बाइबल आधारित रणनीति बनायें	हमारे शहर, देश व संसार के लिए परमेश्वर पर विश वास करें।
5. कार्य सेवा/अगुवों का निर्माण **● एक से एक को**	- सामर्थी आधार - सामर्थी शिष्यता	**- सामर्थी वक्तव्य में अगुवाई करना सीखें**	अपने समूह की अगुवाई करना	- एक प्रमाणित प्रशिक्षक बनें - परमेश्वर के दर्शन को पकड़ना	- एक जीवन से दूसरे जीवन को शिक्षा देना - परमेश वर के दर्शन को पकड़ना - दूसरी कलीसियाओं को तैयार करना
● छोटा समूह एक समूह के रूप में एक साथ	छोटे समूह के समय का अनुभव	**- विस्फोटक वृद्धि शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला** **- वार्षिक सम्मेलन**	- विस्फोटक वृद्धि-शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला - वार्षिक सम्मेलन	- दल का निर्माण करना - सेवकाई से शोषण को दूर करना - वार्षिक सम्मेलन	- हमारे शहर, देश व संसार तक पहुँचने की योजना - सहयोगी शहरों में तैयार करने वाले कार्यक्रम

अगुवाई करने वाला अगुवा

परिचय

अगुवों की आवश्यकता

आज की सबसे बड़ी जरूरत, अगुवों की ज़रूरत है–केवल आसन गृहण करने वाले नहीं परन्तु ऐसे **अगुवे जो अगुवाई करते हैं।** हमें ऐसे स्त्री व पुरुषों की आवश्यकता है जो मसीह के प्रति प्रेम तथा लोगों के प्रति तरस के चलाये चलते हैं। हमें स्पष्ट दर्शन वाले, व परमेश्वर के उद्देश्यों के पूरा करने की आपातकालीन स्थिति को समझने वाले अगुवों की आवश्यकता है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार समझने तथा उसे अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करने या अस्वीकार करने का अवसर मिलना चाहिए।

आप किस तरह इस प्रकार के लोगों को ढूँढ़ते व उनका विकास करते हैं?

कैसे आप उन्हें उनके सामने आनी वाली चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं?

आप पूछ सकते हैं कि, ***'जिस प्रकार के अगुवे की उन्हें ज़रूरत है मैं वैसा अगुवा कैसे बनूँ'?***

अगुवाई, कलीसिया के लोगों में प्राप्त परमेश्वर द्वारा दिये गये आत्मिक वरदानों तथा रचनात्मक स्त्रोंतों को प्रत्येक स्तर पर उत्साहित करने की एक कला है।

हमें अगुवों के प्रशिक्षण समूह की आवश्यकता क्यों है?

आज कलीसिया एक ऐसे उलझे मुकाम पर हैं जहाँ बहुत सी ऐसी बातें जिन्हें हम बीते वर्षों में करते चले आ रहे हैं, वर्तमान समय में उन पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है। उनको अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए उनके ढाँचे में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। यदि आपकी कलीसिया वर्तमान में नये आयाम पर पहुँचना चाहती है, तो अगुवों को आधुनिक युग के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आज पुनः प्रशिक्षण तथा आने वाले समय की कलीसिया के लिए महान क्षमताओं से भरे होने की आवश्यकता है।

हम सभी को ठण्डे दिमाग के लोगों के समूह का हिस्सा होने की आवश्यकता है जहाँ सभी को सामान्यतः सीखने तथा बढ़ने की आवश्यकता है। जैसे जैसे इन बातों की चर्चा होती व उनका इस्तेमाल होने लगता है हम सभी लोग अलग अलग दृष्टिकोण में अन्तज्ञान को प्राप्त करेंगे। जब हम एक साथ मिलकर उसकी खोज करेंगे, तो प्रत्येक जन आवश्यक सिद्धान्तों की सम्पूर्ण समझ में बढ़ेगा।

अगुवों के प्रशिक्षण के समय सन्दर्भ एक महत्वपूर्ण अंश है। हम चाहेंगे कि सिद्धान्तों का अनुसरण किया जाए। नये विचारों के प्रति हमारी सराहना तथा हमारी समझ, हमें हमारी सेवकाई में उन सच्चाईयों का इस्तेमाल करने में हमें उत्साहित करेंगे। अगुवे होने के नाते हमें अनेकों बार सेवकाई पाने की आवश्यकता होती है। आपके जीवन में प्रार्थना व वचन बाँटने का समय, देखभाल करने का खास समय होगा।

एक जीवन से दूसरे जीवन को शिक्षा

आपके समूह से बाहर के समय, आपको किसी ऐसे व्यक्ति से सीखने का अवसर प्राप्त होता है जिसे उन सभी सिद्धान्तों में महारथ प्राप्त है जिन्हें आप अपने जीवन व सेवकाई में इस्तेमाल करना चाहते हैं। छोटे समूह और एक से एक शिक्षा का यह अनूठा संगम आपको वृद्धि करने के लिए सर्वोत्तम वातावरण प्रदान कर सकता है।

प्रशिक्षण समूह संचालन करने वाले अगुवों का उद्देश्य

ऐसे अगवों के नेटवर्क का ख्याल रखना व उन्हें प्रेम करना जो मसीह में बढ़ रहे हैं और एक दूसरे को प्रोत्साहित करने व सहायता करने के लिए समर्पित हैं ताकि वे विस्फोटक शिष्य निर्माण करने वाला वह समूह बन जाएं जो संसार भर में यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाएं।

प्रशिक्षण समूह संचालन करने वाले अगुवे के लक्ष्य

- प्रत्येक जन प्रेम व स्वीकृत महसूस करें
- प्रत्येक जन की, शारीरिक, भावनात्मक, व आत्मिक ज़रूरत को पूरा किया जाए
- प्रत्येक जन को तैयार किया जाए, ताकि वह दूसरों की छोटे समूह के ढाँचे में अगुवाई कर सकें
- किसी को तैयार करें, कि वह दूसरों को एक-से-एक के आधार पर शिष्य बना सके
- प्रत्येक जन को तैयार करें, कि वह एक नव अगुवा तथा एक मेज़बान का निर्माण करें।
- शिष्य-निर्माणकारी समूहों को चलाने हेतू अधिक से अधिक अगुवों का निर्माण हो, ताकि यीशु मसीह का सुसमाचार सारे राज्यों तक फैल जाए।

किस प्रकार से आपका, *अगुवा जो अगुवाई करता है* प्रशिक्षण समूह प्रारम्भ करें

आपकी कलीसिया का सर्वप्रथम छोटा समूह शायद पासबान के द्वारा नेतृत्व किया जाए। परन्तु जब नव अगुवा उस समूह का अगुवा बन जाए, तब पासबान उससे साधारणतः उसे उत्साहित करने, बताने, तथा बहुत सी बातों का लेखा लेने के लिए मिल सकता है कि उन सारे समूहों में क्या चल रहा है। जब उनके नवअगुवों के द्वारा और अधिक समूहों का निमार्ण हो जाता है तो यही समय ***अगुवे जो अगुवाई करते हैं*** प्रशिक्षण समूह के प्रारम्भ करने का उचित समय है।

ध्यान दें: जब आप बहुत से छोटे समूहों को प्रारम्भ करते हैं, तब आपको जल्द छोटे समूहों के साथ-साथ, **अगुवों के लिए प्रशिक्षण समूहों** को भी शुरू कर देना चाहिए।

शामिल अगुवों की सहूलियत के अनुसार समय निर्धारित करें। आपको अपने अगुवों को बहुत सी ज़िम्मेदारियों से मुक्त करना होगा, जो असल में उनके प्रशिक्षण में बाधा बन सकती हैं। क्योंकि इस छोटे समूह का स्वभाव रणनीति से भरा हुआ है, इसलिए इस प्रशिक्षण को उच्चतम प्राथमिकता देना अति आवश्यक है।

अगुवाई करने वाले अगुवे

सत्र एक

निम्नलिखित बातों पर अपने प्रशिक्षक या अगुवे के साथ चर्चा करने के बाद निशान [✓] लगाएं।

अपने अगुवाई के समूह से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. ***प्रस्तावना*** को पढ़ें। यह बताने के लिए तैयार रहें, कि आपके विश्वास के अनुसार किस तरह यह अगुवों का समूह आपके जीवन समूह की अगुवाई व भविष्य के अगुवों का निर्माण करने में प्रभावशाली ढंग से सहायता कर सकता है।

❑ 2. ***कलीसिया का उद्देश्य, हमारे जीवन समूह का उद्देश्य, तथा हमारे जीवन समूह के लक्ष्यों*** को पढ़ें। यह बताने को तैयार रहें, कि आप क्या विश्वास करते हैं, कि किस तरह यह सेवकाई हमारे जीवन को परिवर्तित करती तथा हमें एक कलीसिया के रूप में तैयार करती है ताकि हम हमारे समुदाय तक वचन के साथ पहुँच सकें।

❑ 3. ***समूह के स्वरूप*** तथा ***उसके कर्तव्यों*** पर ध्यान दें। अपनी ज़िम्मेदारी के क्षेत्र को पहचाने तथा उसे अपने प्रशिक्षक तथा अन्य अगुवों के साथ बयान करें। कोई भी प्रश्न पूछें।

❑ 4. ***समूह निर्देशिका*** को पढ़ें। उन्हें अगुवों के समूह में बाँटने के लिए तैयार रहें।

❑ 5. निम्नलिखित ***लेखे*** को पूरा करें।

अपने अगुवाई के समूह के साथ पूर्ण करने के लिए:

❑ 6. एक दूसरे के साथ जान पहचान करें। अपनी व्यक्तिगत बातों को बाटें।

❑ 7. उपरोक्त 1 से 5 तक की बातों पर चर्चा करें व (✓) निशान लगाएं।

इस माह में आपके जीवन समूह में अगुवाई करने हेतू सशक्तिकरण:
निम्नलिखित बातों पर चर्चा करें:

❑ 8. हमारी कलिसिया में अगुवों की आवश्यकता।

❑ 9. महान आज्ञा को पूर्ण करने की आवश्यकता।

❑ 10. हमें जीवन समूह के सदस्यों को दूसरों तक वचन पहुँचाने की चाहत में उत्साहित करने की ज़रूरत है

❑ 11. हमें व्यक्तिगत अगुवाई के गुणों में बढ़ने की ज़रूरत।

जीवन समूह की रिपोर्ट

❑ 12. ________ नियमित उपस्थिति

❑ 13. ________ इस माह नये आगन्तुक

नाम ____________________

पता ____________________

____

❑ 14. एक से एक को प्रशिक्षण में लोग :

सामर्थी आधार ________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी शिष्यता ________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी वक्तव्य ________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

❑ 15. इस माह हमारे समूह के लोगों के द्वारा ________ लोगों ने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में गृहण किया।

प्रार्थना व समापन:

❑ 16. एक दूसरे व समूह के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

❑ 17. सत्र दो की तैयारी हेतू पाठ्य सामग्री को पढ़ें।

❑ 18. अपने अगुवों के प्रशिक्षण हेतू अगले सत्र के लिये दिनाँक ________

समय ________ स्थान ________ निर्धारित करें।

हमारी कलीसिया का उद्देश्य

(मत्ती 28:18-20) के अनुसार महान आज्ञा ही कलीसिया का अन्तिम उद्देश्य है। हमें तब तक शिष्य बनाने वाले शिष्यों का निर्माण करना है जब तक कि इस सम्पूर्ण संसार को यीशु मसीह के सुसमाचार सुनने व प्रतिउत्तर देने का अवसर नहीं मिल जाता। साधारण रूप में कहें तो, चेले वह लोग हैं जो यीशु के समान जीवन व्यतीत करते तथा परमेश्वर के साथ चलने में इतना आनन्दित हैं कि वह मसीह में अपने नये जीवन के बारे में बताने से नहीं रुक सकते।

जीवन समूह की सेवकाई का निर्माण इस तरह से किया गया है, कि कलीसिया का प्रत्येक सदस्य इसी प्रकार जीवन जी सके। इस प्रशिक्षण में आपको एक ऐसा अगुवा बनने का अवसर मिलता है जो दूसरों को चेला बनने में अगुवाई कर सके।

हमारे जीवन समूह का उद्देश्य

एक प्रेम पूर्ण व देखभाल करने वाला परिवार बनना जो मसीह में बढ़ रहा है तथा दूसरों के साथ परमेश्वर के प्रेम को बाँटने वाला बनना है।

हमारे जीवन समूह के लक्ष्य

- कि हर व्यक्ति प्यार व अपनाये जाने का एहसास करे।
- प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक, भावनात्मक व आत्मिक जरूरतों को पूरा करना
- 6 माह के भीतर प्रत्येक व्यक्ति, समूह में 6-8 लोगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाएगा
- दूसरी सेवकाईयों में शामिल होने के लिए उत्साहित करना, जैसे सामाजिक कार्यक्रम, आराधना, सन्डे स्कूल
- प्रत्येक व्यक्ति अपने आत्मिक वरदान को पहचाने व उसे दूसरों की सेवा में लगा सके
- प्रत्येक व्यक्ति बपतिस्मा लेकर कलीसिया का एक सक्रिय सदस्य बन सके
- प्रत्येक सदस्य को, सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता व सामर्थी वक्तव्य में प्रशिक्षण दिया जा सके
- प्रत्येक 6 माह में कलीसिया के भीतर एक नया परिवार जोड़ा जाए
- प्रत्येक 6 माह में एक नवअगुवे का निर्माण हो, जो नये समूह का निर्माण कर सके।
- हमारे समुदाय तक मसीह को लेकर पहुँचने के लिए पर्याप्त मात्रा में समूहों का निर्माण हो।

समूह का ढाँचा

यह ढाँचा सप्ताह दर सप्ताह बदलता रह सकता है परन्तु इसमें निम्नलिखित बातें शामिल हों :

स्वागत (15-20 मिनट)
- प्रारम्भिक प्रार्थना
- बाँटना, स्तुति व अभिलेख

अराधना (15-20 मिनट)
- भजन पढ़ें या गाएं

जीतना (20-30 मिनट)
- आपके प्रभाववाले क्षेत्रों में प्रगति का लेखा
- सुसमाचार सुनाने हेतू रणनीति या अन्य कार्यक्रम बनाना
- जिन लोगों को आप व्यक्तिगत रूप से एक से एक के आधार पर प्रशिक्षित कर रहे हैं, उनकी प्रगति का मूल्यॉकन करें

वचन (20-30 मिनट)
- बाइबल अध्ययन
- प्रार्थना - प्रभु को ग्रहण करने हेतू

समापन
- सूचनाएं व प्रार्थना
- जल-पान (वॅकल्पिक)

कार्य
- शिष्यता व अगुवों की उन्नति के लिए (सप्ताह के बीच में) एक-से-एक को प्रशिक्षण का समय रखें।

इन निर्देशों का पालन करने से एक प्रभावशाली जीवन समूह बनाने में सहायता मिलेगी तथा आप दूसरों को यही प्रशिक्षण देने के लिए तैयार हो जाएंगे।

रचनात्मक, खुले अन्दाज़ के व आनन्दमय रहें। याद रखें कि आपका लक्ष्य एक प्रेमपूर्ण व स्वीकारनीय माहौल में दूसरों को अपने जीवन के बारे में बताना है। ध्यान दें कि आप लाभकारी बातों को ही बाटें, क्योंकि जो बातें आप अपने समूह में करते हैं वही बातें नये समूह में पैदा होंगी।

अपने जीवन समूह की ज़िम्मेदारियों को बाटें ताकि अधिक से अधिक लोग इसे अपना सकें। अगुवों का विकास अनुभव से होगा।

कार्य विवरण

प्रशिक्षक (कोच)

ज़िम्मेदारियाँ:

1. रविवार की अराधना में विश्वास योग्यता से शामिल हों।
2. परमेश्वर के कार्यों हेतू विश्वास योग्यता से दशमांस दें।
3. जीवन समूह के अगुवों के प्रशिक्षण को पूरा करें।
4. छोटे समूह का नेतृत्व कर रहे हैं या कर चुके हैं
5. अगुवा जो अगुवाई करता है- जीवन समूह के अगुवों के प्रशिक्षण को पूरा करने के लिए प्रति 4 सप्ताह में एक बार (व्यक्तिगत या सामुहिक रूप में) अपने सभी अगुवों से ज़रूर मिलें। यह समय :
   क. प्रोत्साहन व दर्शन का समय होगा।
   ख. जीवन समूह के पाँच मुख्य कार्यों के प्रति उत्तरदायित्व का समय होगा।
   ग. शिक्षा देने, सलाह देने, उत्साहित करने व मज़बूती प्रदान करने का समय।
   घ. प्रार्थना के विषय, कलीसिया कार्यक्रमों तथा अन्य सूचनाओं को बाँटने का समय होगा।
6. अपने प्रशिक्षण को लगातार आगे बढ़ाने के लिए अपने पासबान से प्रति 4-6 सप्ताह के बीच में मिलें।
7. अगुवों के वार्षिक उत्साह में शामिल हों।
8. आपकी देखभाल में चल रहे प्रत्येक छोटे समूह में कम से कम वर्ष में दो बार ज़रूर जाएं।

अगुवा

ज़िम्मेदारियाँ :

1. रविवार की अराधना में विश्वास योग्यता से शामिल हों।
2. परमेश्वर के कार्य हेतू विश्वास योग्यता से दशमांस दें।
3. विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया की कार्यशाला में शामिल हों।
4. अपने जीवन समूह को अगुवाई प्रदान करें।
5. समूह के नये लोगों को फोन करें या दौरा करें (कलीसिया में आगन्तुक, कलीसिया के सम्पर्क में आये लोग, इत्यादि)
7. बाइबल अध्ययन के तर्क-वितर्क या कार्यों की अगुवाई करें (या यह कार्य किसी नवअगुवे को सौंपें)
8. जीवन समूह के समय का समापन:
   क. सूचनाएं दें
   ख. प्रार्थना द्वारा समाप्त करें

9. दर्शन दें तथा प्रत्येक सप्ताह बाहर जाकर प्रचार करने हेतू उत्साहित करें
10. एक-से-एक के प्रशिक्षण में सह-संचालन करने के लिए अपने नव-अगुवे की सहायता करें।
11. नव अगुवे को माह में एक बार सामर्थी वक्तव्य (प्रचारकीय दौर मुलाकात) की शिक्षा दें।
12. माह में एक बार अगुवाई करना सीखने में सहायता करें।
13. प्रति चार सप्ताह में अपने प्रशिक्षक व अन्य समूह अगुवों के साथ अगुवों के समूह मे शामिल हों।
14. अगुवों के वार्षिक उत्सव में शामिल हो।

नव-अगुवे (प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अगुवे)

ज़िम्मेदारियाँ:

1. रविवार की अराधना सभा मे विश्वास योग्यता से उपस्थित हों।
2. परमेश्वर के कार्य हेतू विश्वास योग्यता से दशमांस दें।
3. विस्फोटक वृद्धि शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया के कार्यशाला में शामिल हों।
4. जीवन समूह के संचालन में सहायता करें।
5. अपने अगुवों के साथ खोजियों (आगन्तुक व कलीसिया के सम्पर्क के सम्पर्क में आये लोग) से मिलें या फोन पर बात करें।
6. प्रत्येक सभा से पहले अपने अगुवे व मेज़बान के साथ प्रार्थना के लिए मिलें।
7. जीवन समूह का प्रारम्भ।
   - मेहमान का परिचय दें तथा प्रत्येक का अभिनन्दन करें
8. सूचित करने वाले समय की अगुवाई करें (व्यक्त करने हेतु प्रश्नों के नमूने को देखें) या यह कार्य किसी अन्य को सौंपें।
9. अगुवे की माँग पर, वैकल्पित तौर पर बाइबल अध्ययन तथा वार्तालाप की अगुवाई करें।
10. प्रार्थना विषयों, कलीसिया के कार्यक्रमों तथा अन्य सूचनाओं की सूचनाए दें। प्रभु को ग्रहण करनेवाली प्रार्थना के समय में अगुवाई करें (या फिर कोई अन्य व्यक्ति, कभी-2 इसकी अगुवाई कर सकता है।)
11. अपने समूह के सदस्यों हेतू एक से एक को प्रशिक्षण का संचालन करें।
12. प्रतिमाह एक बार अगुवाई करना सीखें सत्र के लिए अपने अगुवों के साथ मिलें।
13. अपने अगुवों के साथ प्रतिमाह एक बार सामर्थी वक्तव्य प्रशिक्षण के लिए मिलें।

14-अगुवों के वार्षिक उत्सव में शामिल हों।

मेज़बान

ज़िम्मेदारियाँ:

1. रविवार की अराधना में विश्वास योग्यता से शामिल हों।
2. परमेश्वर के कार्यों हेतू दशमांस दें।
3. प्रत्येक जीवन समूह सभा से पूर्व प्रार्थना के लिए अपने अगुवे व नवअगुवे से मिलें।
4. सभा के लिए एक आरामदायक जगह का इन्तेजाम करें व कुर्सियां एक चक्र में लगाएं।
5. आवश्यक हो तो बच्चों के बैठने का इन्तज़ाम करें। सामान्य तौर पर देखा जाये तो यह बहुत अच्छा होगा कि लोग अपने बच्चों की देखभाल खुद करें।
6. सभा शुरू होने से पूर्व ही अल्प आहार का इन्तेज़ाम करें, ताकि मेहमानों का स्वागत किया जा सके ।
7. जो लोग भूल जाते हैं उनके लिए अतिरिक्त बाइबल व पेंसिल का इंतेजाम करें।
8. प्रत्येक मेहमान के साथ सच्ची रूचि दिखाऐं, तथा सुन्दर मुस्कुराहट के साथ उनका अभिनन्द करें।
9. उपस्थिती का लेखा लें। साप्ताहिक उपस्थिति रजिस्टर का इस्तेमाल करें।
10. एक-से-एक प्रशिक्षण के दौरान प्रत्येक व्यक्ति की प्रगति का ख्याल रखें, तथा प्रत्येक स्तर को समाप्त करने पर उन्हें जीवन समूह में बधाई दें।

निष्कर्ष

आपका जीवन समूह प्रत्येक भागीदार के लिए उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अनुभव ठहरेगा। जो प्रेम व देखभाल आपके समूह द्वारा प्रगट की जाती है उसके परिणाम स्वरूप, आत्मिक व संख्या में एक अद्‌भुत वृद्धि का माहौल उत्पन्न होगा। आप एक समूह के रूप में अपने परिवार, पड़ोसी तथा मित्रों तक पहुँच सकते हैं। आप बहुत से लोगों को मसीह के सम्बन्ध में आते, अपने विश्वास में मज़बूत होते तथा कलीसिया की संगति में आते देखेंगे। आप और जीवन समूह मसीह के वचनों को लेकर अपने समुदाय व दुनिया तक पहुँच सकते हैं।

क्या आपका समूह सफल होगा? इसका उत्तर **आपके** पास है। परमेश्वर आपके प्रयासों को आशीषित करना चाहता है, और ज़रूर सफल करेगा। यह आनन्दपूर्ण और उत्तेजक रहेगा। फिर भी एक प्रभावशाली सेवकाई बनने में समय और प्रयास दोनो लगेंगे। आपको दृढ़ संकल्प समर्पण, तथा पवित्र आत्मा पर निर्भर होने की आवश्यकता होगी। जिसका प्रतिफल **परिवर्तित जीवन** होंगे। जैसे-जैसे आप **अगुवाई** करते हैं प्रभु आपको आशीष दे।

समूह निर्देशिका

1. हर एक चीज़ को मसीह की प्रभुता के आधीन करो।
   ''सर्वप्रथम परमेश्वर के आधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो। तो वह तुम्हारे सामने से भाग जाएगा।'' (याकूब 4:7)

2. जब आप यहाँ कुछ सुने, जाते समय, उसे यही छोड़ जाएं।
   ''जहाँ बहुत बातें होती हैं वहाँ अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुँह को बन्द रखता है वह बुद्धि से काम करता है।'' (नीतिवचन 10:19)

3. तुम्हारा चालचलन परमेश्वर के योग्य हो।
   ''केवल इतना करो कि तुम्हारा चालचलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं तुम्हें आकर देखूं या चाहे न भी आऊं तुम्हारे विषय में यह सुनुँ कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते रहते हो।'' (फिलिप्पियों 1:27)

4. संसार के लोगों के साथ बुद्धि से व्यवहार करो झगड़ों से बचो।
   ''अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी के बर्ताव करो।'' (कुलिसियों 4:5)

5. सदैव उत्साहित करने वाली सेवकाई को बनाये रखें।
   ''इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, निदान, तुम ऐसा करते भी हो।'' (1 थिस्सलुनिकियों 5:11)

6. योग्य बनने के लिए बुद्धि का इस्तेमाल करें।
   ''पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिये सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।'' (याकूब 1:5)

अगुवाई करने वाले अगुवे

सत्र दो

निम्नलिखित बातों पर अपने प्रशिक्षक या अगुवे के साथ चर्चा करने के बाद निशान [✓] लगाएं।

अपने अगुवाई के समूह से मिलने से पूर्व तैयारीः

❑ 1. **अपने भविष्य के दरवाज़े को खोलना,** पढ़ें। अपने विचार तथा समर्पण पर अपनी प्रार्थनाओं को बाँटने के लिए तैयार रहें।

अपने अगुवाई के समूह के साथ पूरा करने के लिएः-

❑ 2. प्रत्येक जन अपने आनन्द क्षणों व चिन्ताओं को बताएं। आपके समूह की जरूरतों के बारे में बताएं।

❑ 3. बिन्दू 1. पर चर्चा करके निशान [✓] लगाएं, अपने अनुभव बाटें कि मसीह में होने का क्या अर्थ है? तथा किस तरह से यह सच्चाई आपके जीवन जीने के तरीकों को प्रभावित करती है।

❑ 4. निम्नलिखित रिपोर्ट को पूरा करें।

इस माह आपके जीवन समूह की अगुवाई करने में यह आपको शक्ति प्रदान करती है।

❑ 5. परमेश्वर के साथ किये गये आपके समर्पण के बारे में अपने नवअगुवे तथा अपने जीवन समूह को बताएं।

जीवन समूह की रिर्पोट

❑ 6. ____________ नियमित उपस्थिति

❑ 7. ____________ इस माह नये आगन्तुक

नाम ____

पता ____

____

❑ 8. एक से एक को प्रशिक्षण में लोग :

सामर्थी आधार ____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी शिष्यता ____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी वक्तव्य ____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

❑ 9. इस माह हमारे समूह के लोगों के द्वारा ____________ लोगों ने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में गृहण किया।

प्रार्थना व समापनः

❑ 10. एक दूसरे व समूह के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

❑ 11. सत्र तीन की तैयारी हेतू पाठ्य सामग्री को पढ़ें।

❑ 12. अपने अगुवों के प्रशिक्षण हेतू अगले सत्र के लिये दिनाँक ______________

समय ____________ स्थान ____________ निर्धारित करें।

अपने भविष्य के लिए द्वार को खोलना

यह संसार वैसा ही है जैसा आप उसे देखते हैं। आप क्या और कैसे देखते हैं, यह सदैव इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी सोच कैसी है। आपके जीवन के पिछले अनुभवों ने आपके जीवन की परिस्थितियों तथा स्वयं सम्बन्धी दृष्टिकोण को एक आकार दे दिया है। आप तब तक अपने सामने की तस्वीर को नहीं बदल सकते, जब तक आप अपने देखने के उस स्रोत को नहीं बदलते, जो आपके दृष्टिकोण को बदलता है। बहुत से लोग जीवन को गुलाबी चश्मे से देखते हैं। उन्हें कुछ भिन्न तरीके से देखने के लिए अपने चश्मे को बदलने की आवश्यकता पड़ेगी। बहुत से जीवन को असम्भवातों में देखते हैं। और वास्तव में उनके लिए ऐसा ही है; और जब तक वह जीवन में सम्भवताओं को नहीं देखते, उनके लिए जीवन असम्भव ही बना रहेगा।

एक सण्डे स्कूल के अध्यापक ने छोटे जौनी से **विश्वास** को परिभाषित करने के लिए कहा। उसने एक क्षण के लिए सोचा और कहा ''विश्वास का अर्थ किसी चीज़ को तब सच समझना है, जब वह सच नहीं है।'' बहुत से मसीही जो इस अस्पष्ट परिभाषा पर मुस्कुरायेंगे, इस प्रकार से जीवन जीते है जैसे वह इस कथन पर विश्वास करते हैं। परन्तु वह प्रतिदिन इस तरह से जीवन को जीते हैं जो उनके अविश्वास को दर्शाता है।

यह प्रशिक्षण आपको नये चश्मे नहीं वरन नई आखें प्रदान करेगा – यह आपको किसी भी असत्य बात को स्वीकार कराने के लिए नहीं है, क्योंकि वह एक झूठी आशा है। नहीं, मेरी इच्छा यह है कि आप परमेश्वर के वचनों को देखकर निरूत्तर हों, कि सच्चाई क्या है– ताकि आप परमेश्वर की सच्चाई की उस पूर्णता तथा परमेश्वर के सम्पूर्ण प्रयोजन में अपना जीवन जी सकें।

इससे पहले कि आप दूसरों कि अगुवाई करें, आप में यह भरोसा ज़रूर होना चाहिए कि आप एक मसीही जीवन जी रहे हैं। जिन बातों को आप खुद अभ्यास नहीं करते आप उन्हें दृढ़ता के साथ नहीं कह सकते। इसके अलावा दूसरे लोग भी आप पर तब तक विश्वास नहीं कर सकते, जब तक वह आपकी ईमानदारी की गुणक्ता को न देख लें।

यह अपने कार्यो को बदलना नहीं है। क्योंकि यदि आप बदलते हैं तो आपके कार्य स्वयं ही बदल जाएेंगे। आप हमेशा अपने उन विचार व दृष्टिकोण के अनुसार कार्य करेंगे जैसा आप स्वयं व अपनी परिस्थितियों के बीच अपने आपको देखते हैं। एक नए नज़रिये के साथ, कि आप मसीह में क्या हैं, और हम आगे मिलकर आपकी योग्यताओं व गुणों को बढ़ाने की कोशिश करेंगे, ताकि जो आप करते हैं, और जैसे करते हैं, उसे बदला जा सके। आपको और लोगों की मदद की भी आवश्यकता होगी ताकि आप ठीक तरह से सोचते रहें और जैसे जैसे आप अपने नये गुणों का इस्तेमाल करते हैं आप उत्तरदायी भी बने रहें।

मेरे भूतकाल से आज़ादी

''यदि मैं केवल अपने घिनौने पुराने जीवन से स्वतन्त्र हो सकूं''! या ***''उन पापों से जिन्हें मैंने न करने की कोशिश की है''। मैं एक ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ जो परमेश्वर को प्रसन्न कर सके, परन्तु मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूँ, मैंने सब कुछ करने का प्रयास किया है''।*** या ***''जरूर कुछ न कुछ होगा जो मैं कर सकता हूँ''।*** बहुत से परमेश्वर के भय को संजीदगी से मानने वाले लोगों कि यही हताशा है। यहाँ पर इन सारी समस्याओं की जड़ यह है कि वे परमेश्वर के सम्मुख अपने ग्रहण किये जाने को समझ या स्वीकार नहीं कर पाये हैं। उनका अपने आप पर झुझलाना इस बात को दर्शाता है कि उन्हें खुद पर भरोसा था। और अब उन्होंने भूतकाल व वर्तमान में उस भरोसे का नतीजा देखकर, उन्होंने स्वयं से आशा छोड़ दी है।

आखिर क्यों इतना शुद्ध और पवित्र परमेश्वर मुझे स्वीकार करेगा ? वह निश्चय ही जानता है कि जिन बातों की वह चाह व अपेक्षा करता है मैं उनसे रहित हूँ। इस कारण यह मुद्दा इतना विनाशकारी है कि, हमें भलाई की चिन्ता करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमें यह जानना ज़रूरी है कि हमें ग्रहण किया गया है। खुद के ग्रहण किये जाने पर भरोसा न करना या फिर किसी दूसरे से इस विषय पर प्रश्न करना, ऐसा प्रगट करता है कि ***''मैं परमेश्वर के द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता''***।

मैं आपका दिल तोड़ने वाला व्यक्ति नहीं होना चाहता हूँ, परन्तु आप चाहें कितने भी भले कार्य करें आप परमेश्वर के सम्मुख ग्रहण–योग्य नहीं ठहर सकते। यशायाह 64:6 कहता है। ***... हमारे सारे धार्मिकता के कार्य, फटे और मैले चिथड़ों के समान हैं।*** यह आयत आपके सबसे खराब व्यवहार की नहीं वरन् उन सर्वोच्च कार्यों की बात कर रही है जो आप कर सकते हैं।

यह मानों कुछ इस प्रकार की बात है कि परमेश्वर कह रहा हो ***''मुझे अपने भलाई के कार्यों से प्रभावित करने का प्रयास न करो''।*** इस पर विचार करें। क्या आप सोचते हैं कि आप परमेश्वर के लिए उससे बेहतर ठंग से काम कर सकते हैं ? तब आप कहेंगे 'तो इन सब प्रयासों का क्या फायदा है ?' बिल्कुल ठीक! प्रयास करने का कोई फायदा नहीं है। परमेश्वर आपके मैले चिथड़ों के समान कार्यों को नहीं स्वीकार कर सकता। लेकिन फिर भी परमेश्वर आपको ***''उस एक जन में होकर प्रेम करता है''*** (इफिसियों 1:6)। मसीह में वह मुझे स्वीकार व प्रेम करता है। मेरे सारे पाप क्षमा हो गये हैं, क्योंकि मसीह यीशु ने पापों की क्षमा हेतू अपना लहू बहा दिया। परमेश्वर आपके साथ शान्ति के साथ इसलिए है क्योंकि ***''यीशु ने क्रूस पर बहाये गये अपने लोहू के द्वारा शान्ति को खरीद लिया है''*** (कुलुसियों 1:20)। यही वह एक मात्र रास्ता है जो परमेश्वर ने तैयार किया है। यह ही परमेश्वर द्वारा तैयार एकमात्र मार्ग है। सच में इसको छोड़ और कोई रास्ता नहीं है।

मसीह हमारे पापों के ख़ातिर मरा, और जो लोग इसे पढ़ रहे हैं उन लोगों ने पहले ही यीशु मसीह के लोहू द्वारा किये हुए भुगतान को स्वीकार किया होगा। यह जानना, कि आपके पाप क्षमा कर दिये गये हैं, खुद में एक अद्‌भुत बात है-परन्तु ठहरें-आगे अभी और है। सुसमाचार का सर्वोच्च भाग अभी भी बताया जाना बाकी है। जी हाँ, मसीह मेरे पापों के लिए मरा- वह मेरे पापों से निपटता है। परन्तु जब मसीह क्रूस पर मरा तो मैं भी उसके साथ मर गया- जो मेरी देखभाल करता है; वह पापी जो मेरे पापों का स्रोत था। बहुत से लोग, बड़े भरोसे के साथ यह शिक्षा देते हैं कि, आप अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए कुछ नहीं कर सकते वरन आपको साधारणत: मसीह की मृत्यु को आपके पापों का भुगतान करके स्वीकार कर लेना चाहिए। इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें और उस आज़ादी में जीवन व्यतीत करें जो यह जानने से आती है कि आप एक पवित्र परमेश्वर के सम्मुख शुद्ध हैं। पाप रहित नहीं परन्तु अब मेरे पास एक नया स्वभाव है।

कई बार वही लोग आपको उत्साहित करेंगे कि, जो कार्य उसने आपके लिए करें हैं उसके प्रतिउत्तर स्वरूप आप कम से कम, अब परमेश्वर के लिए जीवन बिताने का प्रयास कर सकते हैं। नहीं मेरे मित्र, जैसे कि पापों कि क्षमा कोशिश से प्राप्त नहीं की जा सकती, वैसे ही आप इसे प्रयास द्वारा नहीं जी सकते। हम विश्वास के द्वारा मसीह में अपने नये जन्म को प्राप्त करते हैं। विश्वास से उसमें जन्म प्राप्त करने के द्वारा हम ***''...उसके ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार बन सकते हैं...''*** (2 पतरस 1:4)।

हमारा कर्तव्य केवल उस जीवन की पूर्णता में जीना सीखना है, जो हमें अब प्राप्त हुआ है। हममें परमेश्वर के जीवन को समझने, परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिए, कि वह हमें सामर्थ देगा ताकि हम उसके जीवन को अपनी रोज़मर्रा की जिन्दगी व अनुभवों में लागू कर सकें, तथा धीरज को समझने में जब परमेश्वर अपने चरित्र को हममें निर्माण करने के लिए आवश्यक समय लेता है, बाइबल अध्ययन की आवश्यकता पड़ेगी। याद रखें ***... कि परमेश्वर ही है जो अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों को करने का प्रभाव डालता है*** (फिलिप्पियों 2:13)। और उसकी सुइच्छा को जो वह हममें प्रगट कर रहा है, क्या है? वह इन सारी बातों को एक उद्देश्य के तहत कर रहा है ***''... ताकि मसीह का जीवन हमारी देह में प्रगट हो सके ...''*** (फिलिप्पियों 1:21)। यह समझ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो: ***''धार्मिकता के लिए भूखे व प्यासे हैं ...''*** (मत्ती 5:6)।

मैं परमेश्वर के जीवन की चाह केवल तब करता हूँ,
जब मैं खुद अपने आप के जीवन से असन्तुष्ट हूँ
(जो सर्वोत्तम मैं कर सकता हूँ)

परमेश्वर हमारे जीवन की बहुतायत से हमें कैसे निराशा तक ले जाएगा? वह चाहता है हम देखें कि असल में हम क्या हैं। वह हमारी असफलताओं को अनुमति देता और उन्हें

इतना सशक्त कर देता है, ताकि हम पहचान सकें कि हम कैसी घृणा के पात्र हैं।

परमेश्वर का वचन हमारी अपर्याप्तता को लेकर बिल्कुल स्पष्ट है, परन्तु हमारे हर हालत में स्वयं को बनाये रखने के कारण, हमें अपने कड़वे अनुभवों से होकर गुज़रना अति आवश्यक है। ये कड़वे अनुभव बहुत बार अत्यधिक कष्टदायक होते हैं और ऐसे में ही एक अच्छा मित्र सहायक बनकर कष्टों को दूर करने की कोशिश करेगा। यह सहायता या सहारा मुझमें सुधार लाता है। ऐसा करके वह मुझे क्रूस के पास ले आता है, और इस समय वह मुझे उत्साहित करता है, कि मैं ठीक हूँ। और फिर परमेश्वर अपनी दया के तहत मुझमें पाप मिटाने के कार्यों को पूरा करता है। परमेश्वर मुझे क्रूस तक ले आता है - मृत्यु तक - कमज़ोरी के निमित्त नहीं, और न मृत्यु के - परन्तु इसलिए कि मैं उसके साथ उस स्थान में प्रवेश करूँ जिसका अर्थ मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाना है, ताकि उसकी अन्तिम मृत्यु मुझमें पूरी हो सके। क्यों? मैं कभी भी उसके अविश्वसनीय जीवन के बारे में ***''मसीह मुझमें जीवित है''*** तब तक नहीं जान सकता जब तक मैं यह न जानूं कि ***''अब मैं जीवित नहीं हूँ''*** (गलातियों 2:20)

आप शायद पूछें कि मैं किस प्रकार खुद के लिए मर सकता हूँ? आप नहीं मरते। आप तो केवल उन बातों पर विश्वास करते हो जिसमें परमेश्वर ने कहा कि ***''जब मसीह मरा तो तुम उसके साथ मर गये''*** (रोमियों 6:3)। ***''जब वह दफनाया गया तो आप भी उसके साथ दफनाए गये''*** (रोमियों 6:4)। ***जब वह नये जीवन के लिए जी उठा, तो तुम भी उसके साथ नये जीवन के लिए जी उठे*** (रोमियों 6:5)। क्योंकि यीशु मसीह पाप के लिए मर गया (रोमियों 6:6-7) तुम भी पाप के लिए मरे हुए हो, ***''आप मसीह में पूर्ण हो''*** (कुलुस्सियों 2:10)।

मुझे याद है कि मेरे लिए यह मानना कितना कठिन था कि मैं पाप के लिए मर गया हूँ। कुछ वर्षों पूर्व मैं युवाओं के बीच रोमियों 6 से बाइबल अध्ययन करा रहा था। मुझे वहाँ अंगीकार करना पड़ा कि मैं इस सच्चाई को नहीं समझ पाया था, क्योंकि मेरे अनुभव यह कहते थे कि मैं पाप के लिए मरा नहीं हूँ। मुझे इस बात को उनके सम्मुख स्वीकार करने में परेशानी हुई। मैं घर गया तथा बार-बार रोमियों 6:6 को पढ़ा। मैं परमेश्वर से कहता, ***''मैं पाप के लिए मरा नहीं हूँ।''*** जब मैं पढ़ रहा था प्रभु ने मुझसे कहा, ***''तुम पाप के लिए मृतक हो''।*** हम इस विषय पर बहुत बार बहस करते रहे, जब तक कि मैं एक निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा। क्योंकि परमेश्वर और मैं असहमत थे, तो हममें से एक झूठ बोल रहा था। और मेरे लिए इस बात को समझने में ज़्यादा वक्त नहीं लगा, कि कौन झूठ बोल रहा था और कौन सच। देखें, क्योंकि मैं अभी तक यही विश्वास कर रहा था, कि मैं पाप के अधीन हूँ (इस विचार के अनुसार कि मैं स्वभाव से ही पापी हूँ) मैं ऐसा जीवन व्यतीत कर रहा था, जैसे मैं पापी था। जब मैंने परमेश्वर पर विश्वास करके उसके वचन की सच्चाई को ग्रहण किया, कि मैं पाप के लिए मृतक हूँ, तब मैं पापों के ऊपर उस विजय में जीवन बिता सका, जो मेरी थी वरन जिस दिन और जिस क्षण मैंने यीशु को उद्धारकर्ता

के रूप में ग्रहण किया, वह विजय मेरी हो गयी थी। मेरे इस सच्चाई जान जाने के कारण, कि मैं मसीह में पाप के प्रति मृतक हूँ, किसी नई सच्चाई का उदय नहीं हुआ, परन्तु यह तो पहले से ही सच है। विश्वास का अर्थ परमेश्वर पर भरोसा करना है, न कि अनुभवों पर! जो बातें परमेश्वर ने कही हैं उन बातों पर विश्वास को छोड़ और कोई चीज़ हमें निरन्तर विजय नहीं दे सकती।
इस विषय पर जेम्स मेक्कोनके ने लिखा

***विश्वास परमेश्वर पर निर्भर होना है,
और यह परमेश्वर पर निर्भरता तब शुरू होती है
जब आत्म-निर्भरता का अन्त हो जाता है।***

जब हम इन सच्चाईयों को मानने लग जाते हैं तब हमारा पिता हमारे भीतर विश्वास को बढ़ाने लगता है। जौर्ज मूलर इस कथन को कहने के काबिल थे कि ***''परमेश्वर अपनी सन्तानों के विश्वास को बढ़ाने में आनन्दित होता है। विजय से पूर्व किसी कष्ट को न उठाने की चाह, धीरज के लिए परिश्रम न चाहने की बजाय, हमें इन्हें परमेश्वर के उपाय के रूप में स्वीकार करना चाहिए। मैं इसे बार बार कहता हूँ कठिनाईयाँ, बाधाऐं, कष्ट और बहुत सी बार पराजय, विश्वास का मूल भोजन है।''***

इसलिए ***''अपने को मरे हुओं में से जीवन में लाया हुआ जानकर, परमेश्वर के हाथ में सौंप दो''*** (रोमियों 6:13)।

अधीनता

अधीनता का अर्थ मृत्यु है- मेरी इच्छाओं की मृत्यु, मेरे तरीकों की मृत्यु- मेरे आराम या हर उस चीज़ की मृत्यु है जिसे मैं अपने जीवन में प्रिय समझता हूँ। जब हम अन्त में मृत्यु को देखते हैं तो वह बहुत नकारात्मक होती है, और हम उसे नज़रअन्दाज़ करना चाहते हैं। परमेश्वर इस तरह से नहीं देखता है। उसकी नज़र में मृत्यु वह आवश्यक द्वार है, जिसमें से प्रत्येक व्यक्ति को अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए गुज़रना है- जो उसका जीवन है। यह बाइबल का नियमित विषय है:
यूहन्ना 12:24 ***...जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।*** गलातियों 2:20 इससे पहले कि हम ***'लेकिन मसीह*** को अनुभव करें;' हमें ***'मैं नहीं'*** को अनुभव करना ज़रूरी है। यही परमेश्वर का तरीका है।

एक जवान बैल के बछड़े की कहानी बतायी जाती है। जब वह नया जन्म पाया हुआ था उसे सब कुछ प्राप्त हुआ-दूध, प्रेम, देखभाल। उसका जीवन आसान और आनन्दपूर्ण था। वह पूरे दिन दूसरे जानवरों के बच्चों के साथ खेलता रहता था। एक दिन उसे झटका लगा

और वह अत्यन्त आश्चर्यचकित हुआ, क्योंकि किसान ने उसे पकड़कर एक बड़े बैल के साथ लकड़ी के एक भारी जुए में बांध कर खड़ा कर दिया। जहां कहीं वह बड़ा बैल जाता, उसे भी जाना पड़ता। वह मुश्किल से ही ज़मीन पर अपने कदम जमा सका। पहले पहल, तो वह अपनी इस दशा से बाहर आने के लिए ऐंठा, परन्तु उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। परन्तु वह किसान जो उस बैल को एक उपयोगी भविष्य के लिए तैयार कर रहा था। इस कार्य के परिणाम को बखूबी जानता था।

उस जवान बछड़े के समान हम भी परमेश्वर के व्यवहार पर शंका ज़ाहिर करते हैं। हम लात घूँसे मारते व चिल्लाते हैं। हम शिकायत करते हैं। और हमारी इस शिकायत के दौरान ही परमेश्वर हममें उसकी व्यक्तिगत बढ़ौत्तरी के कार्यक्रम को चालू रखता है। परमेश्वर विशेष रूप से हमारे जीवन में वह कर रहा है जिसकी हमें आवश्यकता है। जब हम यह जान पाएंगे कि वह हमें उपयोगी वह लाभदायक भविष्य के लिए तैयार कर रहा है तो हम उसकी प्रशंसा करेंगे। तब हम बजाय उसका विरोध करने के उसका सहयोग देंगे। एक प्रेमी अभिभावक के समान, वह हमारी बढ़ौत्तरी को पूर्ण व अर्थपूर्ण उद्देश्य बनने में देखरेख करता है। वह हमसे आत्म क्षेत्र में होकर बातें कर रहा है- ***''मैं जानता हूँ कि मुझमें कोई भली वस्तु वास नहीं करती...''*** (रोमियों 7:18) फिर, क्या हम आनन्द के साथ यह कह सकते हैं, ***''क्योंकि मेरे लिए, जीना मसीह है''*** (फिलिप्पियों 1:21)।

क्या आप स्वयं को परमेश्वर के लिए जीवित बलिदान के रूप अधीन करना चाहेंगे? जब तक आप ऐसा नहीं करते, आपके लिए उसकी सेवा करने का प्रयास अर्थहीन है। यह आपके भविष्य के द्वार को खोलने की मूल कुंजी है। जब तक आप यह नहीं करते तब तक आप उसकी सेवा को करने के आनन्द को नहीं जान पायेंगे।

परमेश्वर के प्रति अपनी सम्पूर्ण उपयोगिता को ज़ाहिर करते हुए एक प्रार्थना को लिखें।

प्रिय प्रभु यीशु,

____
____
____
____

हस्ताक्षर ________________
दिनाँक ________________

अगुवाई को सीखना

सत्र तीन

निम्नलिखित बातों पर अपने प्रशिक्षक या अगुवे के साथ चर्चा करने के बाद निशान [✓] लगाएं।

अपने अगुवाई के समूह से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. **अगुवों के समर्पण** को पढ़ें। 4 समर्पणों पर चर्चा करने के लिए तैयार रहें।

❑ 2. **प्रभावशाली लोगों की उपलब्धियों की प्रक्रिया** शिक्षा को पूरा करें। इस बहुमूल्य शिक्षा को पढ़ने में कुछ समय ज़रूर लगेगा, परन्तु यह पढ़ने योग्य हैं। अपने अगुवाई के समूह के साथ अपने जवाबों को बाँटने व उस पर चर्चा करने के लिए तैयार रहें।

❑ 3. निम्नलिखित **रिपोर्ट** को पूरा करें।

अपने अगुवाई समूह के साथ समाप्त करने के लिए

❑ 4. प्रत्येक जन अपनी व्यक्तिगत प्रशंसा व प्रार्थना के विषयों को बतलाए। समूह के सदस्यों की जरूरतों पर बात करें।

❑ 5. बिन्दु 1 से 3 पर चर्चा करने के बाद [✓] निशान लगाएं।

इस माह आपके जीवन समूह की अगुवाई करने में आपको शक्ति प्रदान करना:

❑ 6. चारों में मेरा सबसे मज़बूत समर्पण ________ है।

चारों में मेरा सबसे कमज़ोर समर्पण ________ है।

मेरे साथ प्रार्थना करे कि मैं ____________________

____

❑ 7. आपको आगे बढ़ने के लिए कौन से अगले सात कदमों को आपने चुना है? इसे लागू करने के लिए आपने क्या योजना बनाई है?

मैंने योजना बनाई है कि ____________________

____

____

जीवन समूह की रिपोर्ट

❑ 8. ________ नियमित उपस्थिति

❑ 9. ________ इस माह नये आगन्तुक

नाम ____________________

पता ____________________

____

❑ 10. एक से एक को प्रशिक्षण में लोग :

सामर्थी आधार ________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी शिष्यता ________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी वक्तव्य ________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

________ को ________ प्रशिक्षण दे रहा है।

❑ 11. इस माह हमारे समूह के लोगों के द्वारा ________ लोगों ने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में गृहण किया।

प्रार्थना व समापन:

❑ 12. एक दूसरे व समूह के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

❑ 13. सत्र चार की तैयारी हेतू पाठ्य सामग्री को पढ़ें।

❑ 14. अपने अगुवों के प्रशिक्षण हेतू अगले सत्र के लिये दिनाँक ________

समय ________ स्थान ________ निर्धारित करें।

एक अगुवे के कर्तव्य

जीवन समूह के अगुवे के जीवन में ***चार मूल कर्त्तव्य*** हैं। वह यीशु के वचनों, उसके लोगों, खोये हुए लोगों तथा लक्ष्य से अत्यधिक प्रेम करने वाला जन होना चाहिए।

यदि अगुवा मसीह केन्द्रित नहीं है तो पूरा समूह अगुवे के विश्वासों व कार्यों का अनुसरण करने के द्वारा खतरे में पड़ने जा रहा है। यदि उसके दिल में मसीह व उसकी देह के लिए प्रेम नहीं है, तो या तो वह उस समूह की ढंग से देखभाल नहीं कर पायेगा या फिर, बजाय असल में कलीसिया की स्थापना करने के उसे अपने ही विचारानुसार आत्मिक राज्य में तबदील करने का प्रयास करेगा। यदि वह खोये हुए लोगों तक पहुँचने हेतु समर्पित नहीं है, तो समूह के सदस्य वृद्धिहीन तथा कलाम सुनाने में असफल होंगे। यदि अगुवा उस लध्य के लिए समर्पित नहीं है जो परमेश्वर ने मिशनरी होने के नाते हमें दिये हैं, तो अगुवा अपनी आँखों को लक्ष्य से हटा लेगा तथा अपने समूह के लोगों को परमेश्वर की महान आज्ञा को पूरा करने हेतु तैयार करने में असफल रहेगा।

1. **यीशु मसीह व उसके वचनों के प्रति मज़बूत प्रेम व समर्पण**
   एक अगुवा मसीह केन्द्रित तथा अपने जीवन में आत्मा के फलों को प्रगट करने वाला होना चाहिए। उसके भीतर यीशु मसीह के साथ समबन्धों में बढ़ने, तथा प्रतिदिन प्रार्थना व बाइबल अध्ययन में अपने समय को बिताने के प्रति अनुशासित होने की चाह होनी चाहिए।

2. **यीशु मसीह व उसके लोगों के प्रति मज़बूत प्रेम व समर्पण**
   अगुवे को प्रारम्भिक कदम बढ़ाना चाहिए। यह कहा जाता है कि अगुवा अगुवाई करता है। वह किसी चीज़ के होने का इन्तज़ार नहीं करता, और न ही यह आशा करता है कि कुछ होगा बल्कि वह चीज़ों को उत्पन्न करता है। उसे अपने समूह के लोगों की संवेदनशीलता का गम्भीर ख्याल रहता है कि मेरे लोग आत्मिक रूप में कहाँ पर हैं? क्या वे परमेश्वर के वचनों के प्रति आज्ञाकारी बन रहे हैं? क्या वह सेवकाई के लिए तैयार हो रहे हैं? जब वह कार्यों को प्रगट करने हेतु कार्य करता है तो उसे सकारात्मक और रचनात्मक होना चाहिए। वह अपने समूह के लिए एक ऐसा आदर्श बनना चाहिए जो कह सकें जैसा मैं करता हूँ वैसा करो न कि जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो। यदि अगुवा परमेश्वर के साथ में एकान्त समय नहीं बिताता है तो कैसे उसके अनुसरण करने वालों से ऐसी उम्मीद की जा सकती है? जैसे-जैसे वह अपने समूह के लोगों के जीवन में शामिल होता है, वह बहुत सी समस्याओं का सामना करना तथा उनका समाधान करना सीखता है। उसे समूह के लोगों का ख्याल रखते हुए प्रेम प्रगट करने के द्वारा एक खुलेपन के माहौल का निर्माण करना है वह सदैव सेवा करने के लिए इच्छुक है और उसका यह लक्ष्य होता है कि वह लोगों को समूह के अगुवे पर आधारित होने के बजाय यीशु मसीह पर निर्भर बनाये।

3. **खोये हुओं के प्रति मज़बूत प्रेम व समर्पण**
   जो लोग मसीह को नहीं जानते हैं उनके लिए अगुवा होने के लिए, उस व्यक्ति को प्रतिदिन हिम्मत के साथ सुसमाचार सुनाने में लोगों के लिए आदर्श होना चाहिए। वह लगन के साथ अपने समूह के लोगों को सेवकाई के लिए तैयार करने वाला तथा उनको अपने स्थानों में जहाँ वह कार्य करते व निवास करते हैं सुसमाचार प्रचार करने की प्रेरणा देने वाला भी होना चाहिए। यदि सुसमाचार प्रचार करने के अवसर प्रदान नहीं किये जाते, तो समूह अपने आप में ही सन्तुष्ट रहेगा, और एक समाज बन जाएगा जो केवल आपस में ही तारीफ करते रहते हों।

4. **लक्ष्य के प्रति मज़बूत प्रेम व समर्पण**
   अगुवा, जीवन समूह का अगुवा होने के नाते अपने लक्ष्य के प्रति विश्वासयोग्य तथा जो मिशन मसीह ने अपनी कलीसिया को दिया है उसके प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए। वह शिक्षा को ग्रहण करने वाला, दूसरों से सीखने वाला होना चाहिए, ताकि वह संसार को छुटकारा देने हेतु मिशन के लिए, परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने में सम्भव उत्तम कार्य को कर सके।

प्रभावशाली लोगों की उपलब्धियों की प्रक्रिया

उपलब्धियों की प्रक्रिया को सात भागों में बाँटा जा सकता है-

1. परमेश्वर पर विश्वास
2. एक इच्छा व स्वप्न
3. लक्ष्य
4. योजना
5. प्रतिक्रिया
6. विश्वास
7. कार्य

यह देखने के लिए कि नहेम्याह ने किस तरह अपनी उपलब्धियों की प्रक्रिया को कार्यरत किया नहेम्याह अध्याय 1-13 तक पढ़ें।

पहला कदम - परमेश्वर पर विश्वास

> ***''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है''*** (इब्रानियों 11:1)

यह परमेश्वर की सामर्थ तथा उसके अस्तित्व पर बिना शंका के विश्वास की जाने वाली सहमति या कार्य का स्तर है। किसी ने इस प्रकार से कहा कि, ***''सम्भव बातों पर सहमत होना विश्वास नहीं, वरन् मात्र तर्कज्ञान है।''*** बिना परमेश्वर पर विश्वास किये कोई अनन्त उपलब्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

यरूशलेम के बारे में वह कैसा अभिलेख (हाल) था जिसके कारण उसको नहेमायाह 1:5-12 में प्रार्थना करने का भरोसा जागा?

____

____

____

मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर, जैसा उसने मेरे मन में उसकी महिमा करने की इच्छा को डाला है (यशायाह 43:7) वह अपने कार्यों को (यूहन्ना 17:4) ☐ पूरा कर सकता है ☐ शायद करेगा ☐ करेगा।

दूसरा कदम- इच्छा/स्वप्न

एक समान्य प्रश्न है कि ***आखिर क्यों बहुत से लोग सफल हो जाते हैं और दूसरे नहीं?*** प्रभावशाली लोगों का अध्ययन करने पर अनेकों महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है। सबसे बढ़कर, वह स्वप्नदर्शी है। जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर भी यही चाहता है, वह उसके बारे में विचार करते तथा उसके प्रगट होने की अपेक्षा करते हैं। वह अपने स्वप्न (लक्ष्य) पर ध्यान केन्द्रित करते, उसकी सुरक्षा तथा उसका पालन पोषण करते हैं। जो चीज़ें सम्भावित होती हैं प्रभावशाली व्यक्ति उसकी तस्वीर अपने मन में बनाना सीख लेते हैं। परमेश्वर के स्वप्न को स्वप्न रूप में देखना तथा उसे हकीकत बनाने की इच्छा ही वह स्रोत है जिसके द्वारा हम अपने जीवन में चीज़ों को प्राप्त करते हैं। ऐसा न होने दें कि कोई परमेश्वर के स्वप्न को आपसे चुरा ले जाए।

जब नहेमायाह राजा अर्तक्षत्र के पास गया, तब नहेमायाह के मन में वह स्वप्न (लक्ष्य) कितना स्पष्ट था?
नहेमायाह 2:4-8 ______________________________

____

____

स्वतन्त्र रूप में (क्योंकि परमेश्वर की कोई सीमा नहीं है) व्याख्या करें कि आपके विश्वास अनुसार परमेश्वर आपके जीवन समूह की सेवकाई को क्या बनाना चाहता है। तीन वर्षों के बाद उसकी तस्वीर कैसी होगी?

____

____

____

____

आपकी कौन सी ऐसी व्यक्तिगत इच्छा है जो केवल परमेश्वर ही पूरी कर सकता है?

____

____

____

____

तीसरा कदम- लक्ष्य

स्वप्न देखना हमारे जीवन का एक स्वाभाविक भाग है। जिन चीज़ों की हम इच्छा करते हैं उन्हीं के सन्दर्भ में स्वप्न देखते हैं। जितनी स्पष्ट हमारी इच्छाएं होती हैं, उतना ही स्पष्ट हमारा स्वप्न होगा तथा उतना ही स्पष्ट हमारा लक्ष्य स्थापित होगा। इच्छा हमारे जीवन का वह प्रेरक व आधार है जिसके चलते हम अपने जीवन की सारी बातों का निर्माण कर पाते हैं। किसी इच्छा या धुँधले स्वप्न पर ध्यान लगाने से वह एक विशेष लक्ष्य बन जाता है।

यरूशलेम का पुन: निर्माण करने में क्या लगेगा जानने के पश्चात, नहेमायाह ने क्या किया?
नहेमायाह 2:6, 9 ______________________________

____

____

आपकी इच्छा को पूरा करने में क्या लगेगा?
3 समूह के लक्ष्यों तथा 3 व्यक्तिगत लक्ष्यों को लिखें।

समूह के लक्ष्य	**व्यक्तिगत लक्ष्य**
1 महीने में ____________	____________
____________	____________
6 महीने में ____________	____________
____________	____________
3 वर्षों में ____________	____________
____________	____________

चौथा कदम- योजना

बिना योजना के स्वप्न देखना मात्र एक ख्याल है। लोग इसलिए असफल नहीं होते कि उन्होंने असफल होने की योजना बनायी, वरन् वे इसलिए असफल होते हैं क्योंकि वह योजना नहीं बनाते। किसी भी चीज़ को स्थापित करने के लिए योजना अतिमहत्वपूर्ण है तथा किसी प्रक्रिया को सही मुक़ाम तक पहुँचाने के लिए एक मंजिल व समय-सारणी का होना अति आवश्यक है। यदि आप यह नहीं जानते हैं कि जाना कहाँ है, तो यात्रा की योजना बनाना कठिन हो जाता है। इसलिए किसी भी योजना को बनाने से पहले लक्ष्य का होना ज़रूरी है।

जब नहेमायाह यरूशलेम पहुंचा तो उसने क्या किया? नहेमायाह 2:11-16

____

____

____

____

आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए क्या करने की आवश्यकता है? तीन उठाये जाने वाले कदमों तथा उनके पूरे होने की तारीख की सूची बनाएं। मेरे जीवन समूह के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, मैं निम्न बातें करने की सोच रहा हूँ:

1. ______________________ दिनाँक __________
2. ______________________ दिनाँक __________
3. ______________________ दिनाँक __________

मेरे व्यक्तिगत लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मैं निम्न बातें करने की सोच रहा हूँ:

1. ______________________ दिनाँक __________
2. ______________________ दिनाँक __________
3. ______________________ दिनाँक __________

पाँचवा कदम: प्रतिक्रिया

आपके सारे स्वप्न व लक्ष्य निरर्थक हैं यदि उसके प्रति सार्थक प्रतिक्रिया नहीं होती। आपको वास्तव में विचार करना होगा कि क्या आप सच में अपने लक्ष्य व स्वप्न के प्रति गम्भीर हैं।

जब नहेमायाह ने अपनी योजना को दूसरों में बाँटा तो उन्होंने किस तरह से प्रतिउत्तर दिया? नहेमायाह 2:17,18

____

____

____

____

आपको किसके साथ अपने स्वप्न व लक्ष्यों को बताना चाहिये? __________

____

क्या आपको उन्हें शामिल करने की आवश्यकता है? ______ हाँ ______ नहीं

उन्हें क्या करने की ज़रूरत पड़ेगी? __________

____

छटा कदम: भरोसा (कार्य करने की आज्ञा)

विश्वास के साथ-साथ कार्यों का होना अति आवश्यक है। सफलता प्राप्त करने में सबसे कठिन बात, यह विश्वास करना होता है कि मैं इस कार्य को कर सकता हूँ तथा मुझे उस कार्य को करने हेतु परमेश्वर की इज़ाजत व साथियों का सहयोग प्राप्त है (संगी, पासबान इत्यादि)। उपलब्धियों की प्रक्रिया में कदम दो से लेकर पाँच तक तर्क पाये जाते हैं जिनके साथ हम ज्ञान के आधार पर समायोजन कर सकते हैं परन्तु विश्वास हमारी भावनाओं के साथ जुड़ा है। जिन बातों की व्याख्या की जा सकती है उनके साथ जुड़ा रहना मनुष्य की प्रवृत्ति है: परन्तु जहाँ अनिश्चितता होती है वहाँ हमें असहजता होती है। यदि फिर भी हमें, यह विश्वास नहीं होता कि हम कुछ कर सकते हैं तो यह विश्वास का अभाव हमें कठिन परिश्रम नहीं करने देता और यही कार्य का अभाव हमारे स्वप्न को ध्वस्त कर देता है। हम अधिकतर स्वयं अपने सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। हम केवल उन्हीं क्षेत्रों में कार्य करना पसन्द करते हैं जो हम पहले से जानते हैं जिन चीज़ों में हम सहजता महसूस करते हैं ऐसा करने से हमें कोई आलौकिक परिणाम प्राप्त नहीं होता।

परमेश्वर के स्वप्नों का स्वप्न देखना अति उत्तेजना व रुचिकर होता है जो लक्ष्यों तथा उन सपनों को पूरा करने की योजना को जन्म देता है। जब तक कि परमेश्वर हमें यह विश्वास करने योग्य नहीं बना देता कि हम कर सकते हैं, तब तक हमसे कुछ कार्य नहीं बन पड़ता है।

विश्वास (स्वयं को अनुमति देना) कार्यों को गति प्रदान है।

"अनुमति एक उकाब के उस छोटे बच्चे के समान है जो अन्तिम बार अपने घोंसले को देखकर, सारे भय को दूर करते हूए, अन्ततः परमेश्वर पर तथा अपने पंखों पर निर्भर कर नये जीवन की उड़ान भरने को तैयार होता है, ताकि बाकि का जीवन वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच जी सके।" – रिचर्ड गेलौर्ड ब्रिले

"जो परमेश्वर पर आशा रखते हैं...वह उकाब के समान उड़ेंगे"
(यशायाह 40-31)

निम्नलिखित वचनों को ध्यान में रखते हुए (अ) और (ब) दोनों के लिए जवाब दें।

अ. यरूशलेम के पुन: निर्माण के कार्य को रोकने के लिए उनके शत्रुओं ने कौन सी रणनीति अपनाई ?

ब. नहेमायाह ने उसका प्रतिउत्तर कैसे दिया ?

अ. 2:19 ______

ब. 2:20 ______

अ. 4:7,8 ______

ब. 4:9 ______

अ. 6:5-7 ______

ब. 6:8,9 ______

अ. 6:10 ______

ब. 6:11 ______

नहेमायाह क्यों कार्य करता रहा ? ______

______

सातवाँ कदम: कार्य

इच्छा शायद एक महान प्रेरक हो परन्तु कार्य करने से परिणाम प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम स्वप्नों को आकार प्रदान करता है। आपका लक्ष्य जितना भी बड़ा क्यों न हो, वह ख्यालों से नहीं, कार्यों से जीता जा सकता है। समर्पण व धीरजवन्त होना एक मसीह चरित्र के लक्षण हैं। प्रभावशाली अगुवे कभी हार नहीं मानते। वे ऐसे जन होते हैं कि यदि गिर भी जाएं तो फिर उठ खड़े होते हैं।

नहेमायाह के दृढ़ संकल्प के अलावा, लोगों ने अपना समर्पण किस प्रकार से प्रगट किया ? नहेमायाह 4:15-18

______

______

उनके कार्यों का क्या परिणाम हुआ ?

6:15 ______

6:16 ______

क्या आप उन बातों को पूरा कर रहेहैं जो परमेश्वर ने आपसे अपेक्षा की या फिर आपको किसी परिवर्तन की आवश्यकता है ?

यदि आप अपनी दिशा परिवर्तन नहीं करते, तो जिस तरफ आप अग्रसर हैं वहाँ ही आपका अन्त होगा।

कार्य के प्रति समर्पण व धीरज को उत्पन्न करने के लिए आपको निम्न बातों की ज़रूरत पड़ेगी:

1. एक खास मकसद तथा उसे पूरा करने की ज्वलनशील इच्छा की।
2. एक निश्चित योजना तथा उसके साथ निरन्तर कार्य
3. ऐसा मन जो नकारात्मक तथा हतोत्साहित प्रभावों के प्रतिबन्द हो।
4. एक या उससे ज्यादा ऐसे लोगों की संगति, जो आपको योजना व कार्यों के प्रति कार्य करने को लगातार उत्साहित कर सके।

जब आप स्वयं के तथा अपने जीवन समूह के भविष्य के बारे में सोचते हैं, उस कदम पर चक्कर का निशान लगायें, जिसकी आपके आगे बढ़ाने के लिए सख्त ज़रूरत है।

1. परमेश्वर पर विश्वास
2. इच्छा / स्वप्न
3. लक्ष्य
4. योजना
5. प्रतिक्रिया
6. आत्म विश्वास / अनुमति
7. कार्य

जिस कदम पर आपने निशान लगाया है उसे पूरा करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है ?

______

______

"विश्वास कर्म बिना मृतक है।" (याकूब 2:17)

अगुवाई को सीखना

सत्र चार

निम्नलिखित बातों पर अपने प्रशिक्षक या अगुवे के साथ चर्चा करने के बाद निशान [✓] लगाएं।

अपने अगुवाई के समूह से मिलने से पूर्व तैयारी:

❑ 1. **शिष्य निर्माण हेतु आत्मिक तैयारी** को पढ़ें।

❑ 2. **एक आत्मिक परिवार का बढ़ना** को पढ़ें। चित्र पर चर्चा करने तथा उसका विवरण करने के लिए तैयार रहें।

❑ 3. **शिष्य निर्माण की प्रक्रिया** को पढ़ें। प्रत्येक प्रश्न का जवाब दें कि किस तरह से यह प्रश्न हमारी कलीसिया से ताल्लुक रखते हैं।

❑ 4. **परिपक्वता में बढ़ना एक प्रक्रिया है** कि जाँच को पूरा करें।

❑ 5. निम्नलिखित **अभिलेख** को भरें।

आपके अगुवों के समूह के साथ पूरा करने हेतु:

❑ 6. प्रत्येक जन बताये कि इस माह परमेश्वर ने उसके जीवन में कैसे कार्य किया।

❑ 7. उपरोक्त बिन्दु 1 से लेकर 5 की जाँच करें व निशान [✓] लगायें।

इस माह आपको अपने जीवन समूह की अगुवाई करने के लिए बल दे रही हैं:

❑ 8. जो लक्ष्य आपने अपने लिए पिछले माह निर्धारित किया था उसमें से आपने क्या पूरा किया है ?

____

____

❑ 9. आपको किन उपकरणों की आवश्यकता है ? हम आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचने में क्या सहायता कर सकते हैं ?

____

____

आपके जीवन समूह पर अभिलेखः

❑ 10. __________ नियमित उपस्थिति

❑ 11. __________ इस माह नये आगन्तुक

नाम ______________________________

पता ______________________________

____

❑ 12. एक से एक को प्रशिक्षण में लोग :

सामर्थी आधार __________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

__________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी शिष्यता __________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

__________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी वक्तव्य __________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

__________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

❑ 13. इस माह हमारे समूह के लोगों के द्वारा __________ लोगों ने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में गृहण किया।

प्रार्थना व समापनः

❑ 14. एक दूसरे व समूह के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

❑ 15. सत्र पाँच की तैयारी हेतू पाठ्य सामग्री को पढ़ें।

❑ 16. अपने अगुवों के प्रशिक्षण हेतू अगले सत्र के लिये दिनाँक __________

समय __________ स्थान __________ निर्धारित करें।

शिष्य-निर्माण हेतु आत्मिक तैयारी

1. **एक परिवर्तित जीवन**
   ''इसलिए, यदि कोई मसीह में है, वह एक नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गयी हैं देखो सब नया हो गया है।'' (2 कुरिन्थियों 5:17)

अगर कोई व्यक्ति मसीह का अनुसरण करने में सफल होना चाहता है, उसे मसीह को जानना अति आवश्यक है। ऐसा जीवन जो परमेश्वर की सामर्थ द्वारा परिवर्तित है दूसरों की सहायता कर सकता है। यीशु मसीह की व्यक्ति उद्धारकर्ता के रूप में व्यक्तिगत अनुभव व ज्ञान अति आवश्यक है।

2. **एक शुद्ध जीवन**
   ''यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन और पवित्र ठहरेगा, और स्वामी के काम आयेगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।'' (2 तिमुथियुस 2:21)

यदि हम बहुतायत से अपने कार्यों पर आशीष प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें बाहरी व भीतरी रूप से शुद्ध होने की आवश्यकता है। सारे गुप्त पाप खास तौर पर हमारे विचार, यीशु मसीह की अधीनता में आने चाहिए। ***''छोटी लोमड़ियाँ दाख की बारी को नष्ट कर देती हैं।''*** आपके जीवन का पाप समय आने पर आपकी लगन को ध्वस्त कर देगा। आपको सिद्ध होने की नहीं वरन् आज्ञाकारिता में बढ़ने की आवश्यकता है।

3. **एक समर्पित जीवन**
   ''इसलिए हे भाइयों मैं तुम्हें परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' (रोमियों 12.1)

शुद्ध होना एक बात है, परन्तु परमेश्वर के प्रति समर्पित होना दूसरी बात है। प्रेरित पौलुस कहता है, ***''मेरे लिए जीना मसीह है''*** (फिलिप्पियों 1:21)। अनुसरण करने के मामले में परमेश्वर की बुलाहट व इच्छा के प्रति समर्पित होना अति महत्वपूर्ण बात है। वह छोटा बालक यीशु के पास अपनी पाँच रोटी व दो मछलियाँ ले आया। क्या आपने अपना सब कुछ यीशु को अर्पित किया है।

4. **एक बोझ से भरा जीवन**
   ''जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती हैं तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।'' (कुलुस्सियों 1:28,29)

यह निश्चय ही दूसरों के प्रति बोझ रखने में सहायता करता है। पौलुस का हृदय इस पीढ़ी के प्रति भारी बोझ से भरा था। परन्तु आपको कुछ कार्य करने से पहले आपके हृदय को टूटने का इन्तज़ार करने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर निष्पक्ष रूप से अपने वचनों को आशीष देगा। हमें ही प्रारम्भ करना होगा क्योंकि ऐसा करना हमारी ज़िम्मेदारी है। जैसे ही हम आगे बढ़ेंगे, परमेश्वर हममें दूसरों की उन्नति के लिए बोझ डालेगा।

5. **एक तरस भरा जीवन**
   ''जब उसने भीड़ को देखा, तो उसको लोगों पर तरस आया, ... इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे।'' (मत्ती 9:36,38)

हम यहाँ पर उत्साह या मानवीय पुचकार की बात नहीं कर रहे हैं। हम उस प्रेम की बात कर रहे हैं जो मसीह के स्वभाव के कारण हमारे अन्त:करण से प्रगट होता है। यदि कोई व्यक्ति यह विश्वास करे कि आप उससे प्रेम करते हैं वह कभी आपको नहीं छोड़ेगा परन्तु वे तब तक विश्वास नहीं कर सकते कि आप उन्हें प्रेम करते हैं जब तक कि आप उन्हें सच में प्रेम न करें। यह अचम्भित करता है कि प्रेम किस तरह से आकर्षित करता है। यदि हम परमेश्वर के प्रेम से भरे हैं तो उसका परिणाम कभी न थकने वाली दूसरों की सेवा होगी। हम प्रेम कैसे प्राप्त करते हैं? आत्मा का फल प्रेम हैं। इसलिए हमें पवित्र आत्मा से भरा होना ज़रूरी है।

6. **एक उभरी जिन्दगी**
   ''मैं निर्बलों के लिए निर्बल सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊँ मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।'' (1 कुरिन्थियों 9:22)

बिली सण्डे से जब मसीह के लिए अनेकों आत्माओं को जीतने का राज पूछा गया। तो कहा जाता है कि वह एक खिड़की के पास गया और वहाँ से खड़े होकर सड़कों पर भीड़ की ओर देखकर कहा, ''वे नरक की ओर जा रहे हैं। मेरे दोस्तो, जब यह सच्चाई आपके हृदय में समा जाती है, तो वह आपको इन नाश होती आत्माओं के प्रति उभारेगी।'' अपने भीतर खोये हुओं को बचाने तथा उन्हें परिपक्वता में लाने के लिए चाह का निर्माण करें।

7. **एक प्रयत्नशील जीवन**
   ''क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाये मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।'' (1 कुरिन्थियों 2:2)

प्रेरित पौलुस कहता है कि ***एक बात मैं करता हूँ*** (फिलिप्पियों 3:13)। वह शिष्यों का निर्माण करने में दृढ़ संकल्प था। वह एक मुद्दे को लेकर अटल था।

8. प्रकाशमान जीवन

''तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।'' (भजन संहिता 119:130)

वचनों को जानना अति आवश्यक है ताकि आप किसी भी व्यक्ति को बढ़ने का मार्ग बता सकें। बिना वचन के वह नहीं बढ़ सकते। रोमियों 10:17 में बताया गया है, ***''विश्वास सुनने से होता है और सुनना मसीह के वचन से होता है।''*** लूका 8:11 में बीज बोने वाले के दृष्टान्त द्वारा बताया गया है कि ***''वह बीज परमेश्वर का वचन है।''***

9. एक प्रार्थना का जीवन

''मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।'' (यिर्मयाह 33:3)

परमेश्वर प्रार्थनाओं का जवाब देता है। हमें अपने शिष्यों तथा उन पर निभाई जाने वाली सेवकाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

एक प्रगतिशील आत्मिक परिवार

जैसे-जैसे हमारा समूह व अन्य समूह नये नये समूहों को जन्म देते हैं, हमारी कलीसिया यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ सारे समाज तक पहुँच जाएगी।

क्या यह बात निरन्तर प्रसन्न करने योग्य है? ________ हाँ ________ नहीं

सच में इस प्रकार की रणनीति का इस्तेमाल करने के लिए, आपके विचार से हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत क्या होगी?

____

____

हमारा जीवन समूह एक ऐसा परिवार होना चाहिए जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सिद्धता की ओर बढ़ता तथा सेवकाई व अगुवाई के गुणों को सीखता है।

आत्मिक परिवार

आत्मिक उन्नति सर्वोत्तम **आत्मिक परिवार (छोटे समूह)** में होती है, परन्तु उसके लिए **एक से एक को पोषण व प्रशिक्षण** की ज़रूरत है।

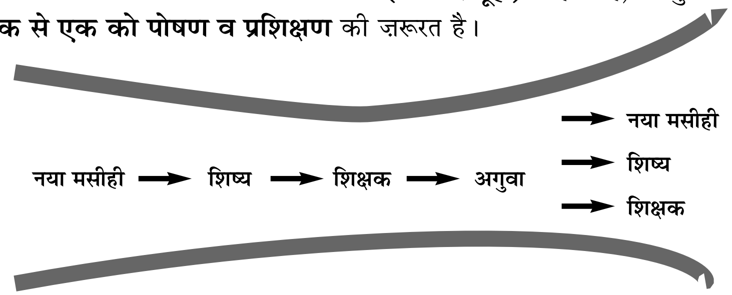

एक व्यक्ति जब **अपनी जरूरतों से** ध्यान हटाकर, दूसरों की जरूरतों को पूरा करने की चिन्ता करता है तो वह **परिपक्वता** के लक्षण प्रगट करता है।

कलीसिया आत्मिक परिवार का नेटवर्क होना चाहिए!

बहुत सी कलीसियाएं आत्मिक परिवार का निर्माण करने की बजाए आत्मिक अनाथों का निर्माण करती हैं।

आत्मिक अनाथ ______________________________ **आत्मिक परिवार**

आपके विचार से जहाँ आपकी कलीसिया आज है वहाँ 'X' का निशान लगायें और जहाँ आप उसे देखना चाहते हैं वहाँ 'O' का निशान लगाएं।

शिष्य निर्माण की प्रक्रिया

एक प्रगतिशील आत्मिक परिवार होने के लिए हमें एक शिष्य निर्माण की प्रक्रिया बनाने की आवश्यकता है। ऐसी प्रक्रिया जिसमें बाइबल के सिद्धान्त शामिल हों, और वह हमारी महान आज्ञा को पूरा करने में सहायता करती हो।

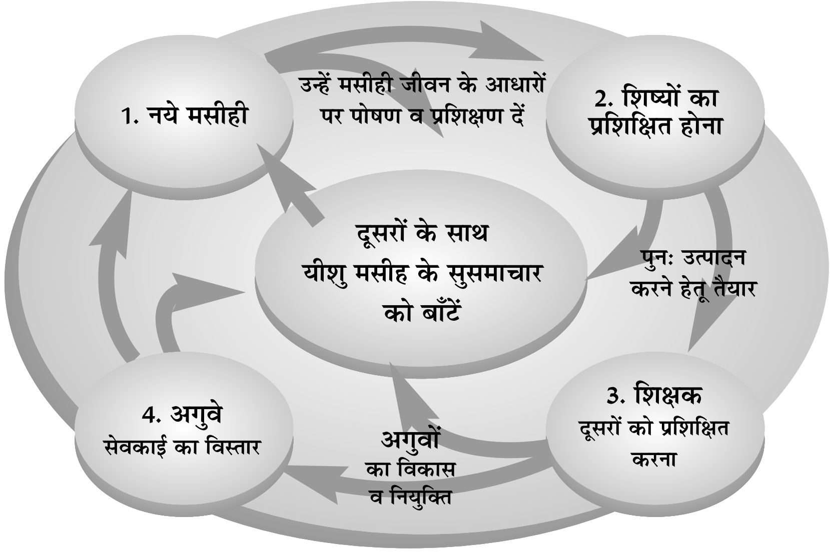

इस चित्र का अध्ययन करें तथा जब आप निम्नलिखित बातों को समझाते हैं तो चित्र पर दिये तीरों के निशान का अनुसरण करें।

जब हम यीशु मसीह के सुसमाचार को दूसरों में बाँटते हैं... तो यह प्रक्रिया परमेश्वर के उद्देश्य के साथ शुरु होती है।

यह **परमेश्वर की कलीसिया का लक्ष्य** है तथा यह **प्राथमिक** व **निरन्तर बने रहने वाला लक्ष्य** भी होना चाहिए।

क्यों? ______

वह कौन से कारण हैं जिनकी वजह से बहुत सी कलीसियाएं प्रचार करने तथा मसीह के बारे में बताने से रुक जाती हैं?

______

जो लोग यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में गृहण करते हैं हम उनका क्या करने जा रहे हैं?

1. जब हम नये मसीही को सुसमाचार सुनाते हैं तो उसके बाद उसे पोषण की आवश्यकता होती है।

हमें प्रेम व देखभाल के साथ उनका पोषण करना चाहिए।

जब हम नये मसीहियों को मसीही जीवन की बुनियादी बातें बताते हैं तो ... यह प्रक्रिया लगातार आगे बढ़ती है।

प्रार्थना व बाइबल अध्ययन बुनियादी बातें हैं। ***और कौन सी बुनियादी बातें हैं जो मसीहियों को समझने की आवश्यकता है?*** ______

______

मसीहियत की बुनियादी शिक्षाओं में प्रशिक्षित होना नये मसीहियों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है? ______

2. शिष्यों का प्रशिक्षित होना

क्योंकि उन्हें पुनः उत्पादन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है...

इसलिए वे पुनः उत्पादन के लिए तैयार हैं।

पुनः उत्पादन करने वाले वे लोग हैं जो खुद प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। वे अब **अगुवाई** करने के लिए तैयार हैं।

3. शिक्षक दूसरों को प्रशिक्षण देते हैं

जो दूसरों को बुनियादी **प्रशिक्षण** देने के द्वारा पुनः उत्पादन करते हैं वे शिक्षक हैं।

अगुवों का विकास तथा नियुक्ति

जब वह खुद को एक **निपुण व ... दूसरों को शिक्षा देने योग्य** साबित कर देता है (2 तिमुथियुस 2:2), तब वह किसी भी विशेष सेवकाई हेतु तैयार होने के लिए तैयार हैं।

यह प्रक्रिया और अधिक विस्तार करती है जब पुनः उत्पादन करने वाले अगुवे अब...

4. अगुवे सेवकाई का विस्तार कर रहे हैं

ध्यान दें- ***इस प्रक्रिया के प्रत्येक भाग का मुख्य केन्द्र दूसरों में यीशु मसीह के सुसमाचार को बाँटना है।***

अपने हाथ के द्वारा चक्र 1 व 4 के चित्र के सभी पहलुओं पर नजर डालें। चक्र 1 और 4 का बखान करते हुए बताएं, कि ज्यादातर कलीसियाएं कैसे कार्य करती हैं। यदि वह नये लोगों तक पहुँचते हैं, तो उन्हें सेवकाई में नियुक्त कर देते हैं। बिना चक्र 2 व 3 के लोग अगुवों के रूप में विकास नहीं कर सकते। सेवकाई की ज़िम्मेदारी ऐसे लोगों के कंधों पर होगी, जो स्वयं अपने उद्धार के निमित्त निश्चित नहीं होंगे। वह शायद यह भी

नहीं जानते हों कि किस तरह से बाइबल या प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से बात की जाती है। वह पवित्र आत्मा से भरना न जानते हों और शायद ही उन्होंने किसी दूसरे के साथ सुसमाचार बाँटा हो।

आपके विचार से उनकी सेवकाई कितनी प्रभावशाली होगी?

____

क्या यह हमारी कलीसिया की तस्वीर को प्रगट करता है?

____

महान आज्ञा को पूरा करने के लिए शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया अति आवश्यक है

परिपक्वता में बढ़ना एक प्रक्रिया है

जिन बॉक्स को आपने अपनी प्रक्रिया में पूरा कर लिया है उन पर निशान [✓] लगाएं।

- ❑ मैंने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार किया है
- ❑ मैंने दूसरे मसीहियों द्वारा पोषण प्राप्त किया है
- ❑ मैंने निम्न मसीही जीवन के बुनियादी तत्वों को पूरा किया है:
  - ❑ सामर्थी आधार
  - ❑ सामर्थी शिष्यता
  - ❑ सामर्थी वक्तव्य
- ❑ मैं स्वयं को ऐसा शिष्य मानता हूँ जिसने बुनियादी शिक्षा प्राप्त की है।
- ❑ मैं पुनः उत्पादन करने तथा दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार हूँ।
- ❑ मैं ऐसा शिक्षक हूँ जो दूसरों को बुनियादी शिक्षाएं देता है।
- ❑ मैंने दूसरों को मसीही जीवन की बुनियादी बातों में शिक्षा दी है (या दे रहा हूँ)। प्रत्येक के लिए संख्याओं को लिखें।
  - ________ सामर्थी आधार
  - ________ सामर्थी शिष्यता
  - ________ सामर्थी वक्तव्य
- ❑ मैंने अगुवाई करने वाला अगुवा-नव अगुवे के प्रशिक्षण का सम्पूर्ण अध्ययन किया है।
- ❑ मैंने एक नव-अगुवे को निम्न बातों में प्रशिक्षित किया है या कर रहा हूँ:
  - ❑ सामर्थी वक्तव्य
  - ❑ अगुवाई सीखना - नव अगुवों का प्रशिक्षण
- ❑ मैंने सेवकाई के निम्न क्षेत्रों में विशेष अगुवे का विकास प्राप्त किया है।
  ____
  ____
- ❑ मैं निम्न क्षेत्रों में अगुवा बनाया जा चुका हूँ:
  ____
  ____
- ❑ मैं नियमित रूप में दूसरों को यीशु का सुसमाचार सुनाता हूँ।
- ❑ अन्य ______________________________
- ❑ मैं निम्न बातों को पूरा करने के द्वारा अपने विकास को निरन्तर आगे बढ़ाना पसन्द करूँगा ______________________________

अगुवाई करने वाला अगुवा

सत्र पाँच

निम्नलिखित बातों पर अपने प्रशिक्षक या अगुवे के साथ चर्चा करने के बाद निशान [✓] लगाएं।

अपने अगुवाई के समूह से मिलने से पूर्व तैयारीः

❑ 1. **अपने समूह को अपनी जीवन की गवाही बाँटने हेतु कैसे तैयार करना है,** पढ़ें। इस कार्यशाला का इस्तेमाल करते हुए, अपनी साक्षी का निर्माण करें। अपने अगुवों के साथ विचार विमर्श करने के लिए तैयार रहें कि कैसे आप अपने समूह के सदस्यों को प्रशिक्षित करने जा रहे हैं।

❑ 2. अध्ययन करें, कि **कैसे आप एक आनन्दमय तथा प्रभावशाली दोस्ताना पार्टी का आनन्द उठा सकते हैं।** अगुवे के साथ विचार विमर्श करने के लिए तैयार रहें कि पार्टी से सम्बन्धित आपकी क्या योजना है।

❑ 3. निम्न **रिपोर्ट** को पूरा करें।

आपके अगुवाई समूह के साथ सम्पन्न की जाएः

❑ 4. प्रत्येक जन अपनी स्तुति व प्रार्थना के विषय को बताएं। सदस्यों की जरूरतों के बारे में चर्चा करें।

❑ 5. ऊपर लिखे बिन्दु 1 से 3 पर चर्चा करें व [✓] निशान लगाएं।

इस माह आपको अपने जीवन समूह की अगुवाई करने हेतु बल दे रही हैः

❑ 6. मैंने निम्न ________ तारीख में अपने जीवन समूह के सदस्यों को मेरे जीवन की कहानी कार्यशाला द्वारा प्रशिक्षण देने की योजना बनायी है। मुझे कार्यशाला की ________ प्रतियाँ बनाने की ज़रूरत है।

मेरे साथ प्रार्थना करें कि मैं ________________________________

____

❑ 7. एक मित्रों की पार्टी की ________ करने के लिए आप क्या योजना बनाते हैं ?

मैं योजना बनाता हूँ ________________________________

____

आपके जीवन समूह पर अभिलेखः

❑ 10. ____________ नियमित उपस्थिति

❑ 11. ____________ इस माह नये आगन्तुक

नाम ________________________________

पता ________________________________

____

❑ 12. एक से एक को प्रशिक्षण में लोग :

सामर्थी आधार ____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी शिष्यता ____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी वक्तव्य ____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

____________ को ____________ प्रशिक्षण दे रहा है।

❑ 13. ____________ लोगों ने समूह के सदस्यों द्वारा मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया है।

प्रार्थना व समापनः

❑ 12. एक दूसरे के तथा समूह के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।
❑ 13. अध्याय छः की तैयारी हेतु अध्याय पर नज़र डालें।
❑ 14. अगले अगुवाई करने वाले अगुवों के सत्र के लिए दिनाँक ____________ समय ____________ तथा स्थान ____________ निर्धारित करें।

अपने समूह को उनके जीवन की कहानी बताने के लिए कैसे तैयार करें

- अपनी जीवन की कहानी (व्यक्तिगत साक्षी, कि कैसे आपने अपने जीवन में मसीह को गृहण किया) निम्नलिखित कार्यशाला का प्रयोग करते हुए तैयारी करें।
- अपने जीवन की कहानी को अपने जीवन समूह के साथ बाँटें।
- अपने समूह के प्रत्येक सदस्य के लिए मेरे जीवन की कहानी कार्यशाला की प्रतियाँ बनायें। (ध्यान दें: आप इन मुख्य बातों की नकल कर सकते हैं। ठीक इसी प्रकार की कार्यशाला सामर्थी शिष्यता के अध्याय 8 तथा सामर्थी वक्तव्य के अध्याय 1 में दी गयी है)। प्रत्येक सदस्य को निर्देश दें कि वह निर्देशों को पढ़कर अगले सप्ताह समूह में आने से पूर्व 1 मिनट की साक्षी तैयार करके आयें।
- अपनी अगली जीवन समूह की सभा में लोगों को जोड़ों में अर्थात् पुरुष के साथ पुरुष व स्त्री के साथ स्त्री को बैठायें। जो उन्होंने लिखा है आपस में बाँटें। वह एक दूसरे की स्पष्ट करने तथा उनकी गवाही को उन्नत बनाने में सहायता कर सकते हैं।
- अनेकों लोगों को अवसर दें कि वह अपनी लिखित गवाही को समूह के सम्मुख बाँटें।
- जो लोग अपनी गवाहियों को बाँटते हैं उन्हें उत्साहित करना न भूले।
- जब सब लोग अपनी गवाही बाँट चुकें तो समूह से ध्यान देने के लिए कहें कि वह साक्षी देने वाले, पहले कैसे थे, और अब कैसे हैं।
- उन्हें उत्साहित करे, कि उनकी यह जीवन गाथा परमेश्वर के अनुगृह से भरपूर है। उन्हें अपनी गवाही बार-बार बतानी चाहिए। उनकी गवाही सुसमाचार प्रचार नहीं है परन्तु उसमें सुसमाचार की बातें हैं, और जिनके द्वारा सुसमाचार बाँटा जा सकता है।
- उनसे पुस्तिका **क्या तुम परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप में जानना चाहोगे ?** या **चार** आत्मिक सिद्धान्त के द्वारा सुसमाचार प्रचार करने को कहें।

मेरे जीवन की कहानी कार्यशाला

इस कार्यशाला का उद्देश्य आपकी अपनी साक्षी को लिखने तथा उसे प्रस्तुत करने में सहायता करना है।

मेरे जीवन की कहानी को कैसे तैयार करें- व्यक्तिगत साक्षी

कोई भी विषय या मुद्दा व्यवस्थित ढंग से तैयार करने पर अधिक प्रभावशाली बन सकता है। सावधानी के साथ तैयार गवाही, जो पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थी हो, प्रत्येक सुनने वाले के लिए अकस्मात प्रभावशाली साबित हो सकती है। हमारे भीतर मसीह को इतना स्पष्ट, आकर्षक व सहज रूप में प्रस्तुत करने की चाह होनी चाहिए, कि जो कोई उसके बारे में सुने, वह उसे जानना चाहे, और यह भी जाने कि मसीह को व्यक्तिगत रूप में कैसे स्वीकार किया जाता है।

व्यक्तिगत गवाही के दौरान, करने वाली तथा नहीं करने वाली बातें-

करने वाली बातें:

1. जब आप साक्षी को लिखते हैं तो परमेश्वर से आपको बुद्धि व मार्गदर्शन देने के लिए प्रार्थना करें। (याकूब 1:5,6)
2. चार बिन्दुओं की रूपरेखा को अनुसरण करें, **मेरी जीवन की कहानी** (उदाहरण कार्यपृष्ठ को देखें)
   अ. परमेश्वर को जानने से पूर्व के अपने जीवन के बारे में बतायें।
   आ. बताएं कि आप किस तरह मसीह के बारे में जानें (विशेष रूप में)
   इ. मसीह को गृहण करने के पश्चात् के जीवन के बार में बतायें (अपने जीवन के सकारात्मक परिवर्तन तथा वह आपके लिए अब क्या मायने रखता है।
   ई. एक मेल खाती हुई बाइबल की आयत बतायें।
3. यदि आपने युवा अवस्था में मसीह को स्वीकार किया है तो बिन्दु (इ) को विस्तार से बताएं।
4. बिन्दु (अ) के लिए लगभग 10 सेकण्ड का समय, बिन्दु (आ) के लिए 20 सेकण्ड का, बिन्दु (इ) के लिए 25 सेकण्ड का, और बिन्दु (ई) के लिए 5 सेकण्ड का समय लें। बिन्दु (अ) और (आ) आपके जीवन के इतिहास को दर्शाते हैं। एक बार जब आप इसे तैयार कर लें तो फिर उसे बार-बार बदलने की कोई ज़रूरत नहीं है। बिन्दु (ई) को सदैव ताज़ा और नया रखना चाहिए-मसीह वर्तमान में आपके जीवन में क्या कर रहा है।
5. एक आकर्षक तथा ध्यान को खींचने वाली बातों से प्रारम्भ करके अच्छे निष्कर्ष के साथ समाप्त करें। पूरी गवाही के दौरान एक खास विषय को लेकर चलें। उदाहरण:

जीवन का उद्देश्य	अपनेपन का एहसास
परमेश्वर का वचन	उद्धार की पुष्टि
मृत्यु के भय से आज़ादी	जीवन के अनेकों भय से मुक्ति
आत्म बन्धनों से आज़ादी	मन की शान्ति
सम्पन्नता	परमेश्वर का प्रेम
परमेश्वर की क्षमा	सफलता

6. अपने भूतकाल व वर्तमान के अनुभवों को इस तरह से लिखें कि प्रत्येक सुनने वाला जन आपके साथ जुड़ा हुआ महसूस करे। जो परिवर्तन आपके जीवन में हुए हैं उनके बारे में चर्चा करें जैसे: नफरत से प्रेम; बदले की भावना से देखभाल; निराशा से आनन्द में; चिन्ता से शान्ति; जल्दबाजी से धीरज; अनुशासनहीनता से स्थिरता।
7. अन्तिम पृष्ठ लिखने से पूर्व सावधानी से काट-छांट कर पुन: लिखें।
8. अपनी गवाही को तब तक याद करें जब तक वह आपके जीवन का स्वाभाविक हिस्सा न बन जाए।

न करने वाली बातें:

1. ज्यादा मसीही लगने वाले शब्दों का इस्तेमाल न करें- जैसे: **उद्धार पाना, मनपरिवर्तन, कायल होना, नया जन्म पाना** और **पाप**। यद्यपि ये शब्द हमारे लिए बहुत कीमती हैं परन्तु यह गैर मसीहियों के द्वारा गलत समझे जाते हैं।
2. ज़्यादा शब्दों का इस्तेमाल न करें, इधर-उधर हवा में घूसे न मारें, या इस बात पर ज़्यादा ज़ोर न दें कि आप कितने ज़्यादा बुरे थे।
3. अद्भुत, अनुग्रहकारी, बहुत बढ़िया, जैसे शब्दों का इस्तेमाल न करें।
4. किसी भी चर्च या संगठन का नाम तुच्छ तरीके से न लें।
5. किसी भी व्यक्ति या संगठन के बारे में नकारात्मक बातें न बोलें।
6. इस प्रकार की तस्वीर न प्रस्तुत करें कि मसीही जीवन में कोई परेशानी नहीं होती।

अपनी गवाही की जाँच करें

1. मेरा विषय क्या है?
2. क्या मेरा प्रारम्भिक वाक्य लोगों के ध्यान को आकर्षित कर सकेगा?

मसीह को ग्रहण करने से पहले मेरा जीवन:

1. याद रखें कि मैं गैर-मसीहियों से बातें कर रहा हूँ। क्या वे जुड़ा महसूस कर सकते हैं? क्या यह वास्तविक है?
2. किस तरह से मुझे महसूस हुआ कि मुझे मसीह की ज़रूरत है?

मैंने मसीह को कैसे ग्रहण किया:

1. क्या मैं विशेष रूप से बता पाया कि मैंने मसीह को किस तरह से ग्रहण किया?

2. क्या आपकी गवाही को सुनने के पश्चात, कोई गैर मसीही मसीह को ग्रहण करना चाहेगा तथा उसे वह तरीका पता चलेगा?

मसीह को ग्रहण करने के पश्चात् मेरा जीवन:

1. क्या मैंने उन घटनाओं का स्पष्ट रूप से बख़ान किया जिसने मेरे जीवन को परिवर्तित किया था?
2. क्या यह वास्तविक है? याद रखें कोई सिद्ध नहीं है।
3. क्या इसके द्वारा यह प्रकट होता है कि मसीह मेरे जीवन में बदलाव ला रहा है?

उचित बाइबल वचन:

1. क्या यह वचन मेरे **जीवन की कहानी** से मेल खाता है?

जब आप अपनी गवाही को बाँटें तो ध्यान रखें:

1. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर, उत्साह के साथ बाटें। (इफिसियों 5:18)
2. स्वाभाविक व सहज ध्वनि में बात करें।
3. अनुचित आचरण को नजरअन्दाज करें जैसे: नाक खुज़ाना, गला साफ करना, **अम्म** या **आह** जैसी आवाजों का प्रयोग करना।
4. मसीह को ग्रहण करने के सन्दर्भ में **निर्णय** लेने के लिए ज़्यादा दबाव डालने की ज़रूरत नहीं है। याद रखें मनुष्य **आत्मा से जन्मा** है, न कि मनुष्यों के तर्कों से। यद्यपि परमेश्वर उनका भी इस्तेमाल कर सकता है।
5. लोगों पर प्रचार न करें। लोगों को **गवाही दें, प्रचार** नहीं। बोले **'मैं' 'आप'** नहीं। याद रखें कि यह **आपकी** गवाही है।
6. **कभी-कभी मुस्कराएं।** परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको चमकदार चेहरा दे।

मेरे जीवन की कहानी का कार्यपृष्ठ

मसीह को ग्रहण करने से पहले मेरा जीवनः

मैंने मसीह को कैसे ग्रहण किया (विशेष रूप में बताएं):

मसीह को ग्रहण करने के बाद मेरा जीवनः

उचित बाइबल वचनः

अपने जीवन समूह या अनेकों समूहों को साथ लेकर किस प्रकार से मित्रों के साथ एक प्रभावशाली व आनन्दमय पार्टी का आयोजन करें

मित्रों की पार्टी क्या है ?

हम प्रत्येक सप्ताह मिलकर परमेश्वर के वचनों का आनन्द उठाते रहे हैं। परमेश्वर के साथ तथा एक दूसरे की संगति में चलना एक आशीष है। अधिकतर लोग जिनके जीवन को हम छूते हैं वह इस प्रकार के सम्बन्धों के बारे में कुछ नहीं जानते। हमारे पास लोगों को इस प्रकार की दोस्ताना पार्टी में बुलाने के द्वारा, अपने आनन्दमय अनुभवों को बताने का एक खास अवसर होता है। वे मसीही संगति का अनुभव करेंगे तथा समझ पायेंगे कि किस तरह से परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाया जा सकता है।

मुझे किसे आमन्त्रित करना चाहिए ?

आप सभी को आमन्त्रित कर सकते हैं, परन्तु खास रूप से उन्हें बुलायें जिनके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं। आपने अपने **व्यवहार में आने वाले** सात लोगों को नामांकित कर लिया है। क्यों नहीं एक निमन्त्रण पत्र तैयार करके उन्हें आमन्त्रित किया जाये। जितने लोग आपके कमरे में बैठ सकते हैं सदैव उससे तीन गुना लोगों को आमन्त्रि करें।

मैं क्या कहूँगा ?

उन्हें बताएं कि उनके मित्रगण एक उत्सव मना रहे हैं, जिसमें उनसे अपने एक मित्र को लाने के लिए कहा गया है। उन्हें अवश्य बतायें कि वहाँ पर कोई न कोई अपने जीवन के बारे में बतायेगा कि कैसे उन्होंने **आज इस युग में मसीहीयत की सच्चाई को जाना।**

यदि उन्हें आने के सन्दर्भ में निर्णय लेने के लिए समय चाहिए, तो आप आगे बढ़कर दुबारा उनसे पूछना न भूलें। उन्हें पार्टी का समय, दिनाँक, तथा स्थान व किस तरह की पार्टी है (खेल, बारबीक्यू, गेंद फेंकना इत्यादि) अवश्य बतायें। **उनके सामने प्रस्ताव रखें कि आप उन्हें अपने साथ पार्टी में ले जाएंगे और अगर वह चाहे तो छोड़ भी देंगे।**

विशेष रूप में नाम लेकर (व्यक्तिगत तथा सामूहिक तौर पर) **प्रार्थना करें** कि वह आने का निर्णय ले सकें। जब वह आने का निर्णय लेते हैं तो प्रार्थना करें कि कोई भी चीज़ उन्हें आने से न रोक सके।

हम अपनी मित्रता पार्टी में क्या करेंगे ?

प्रत्येक समूह स्वयं अपनी पार्टी को स्वयं नियोजित कर सकता है। आपके लिए कुछ सुझाव दिये गये हैं।

- टेबल का खेल
- बाहर कहीं पिकनिक पर जाना या बारबीक्यू
- मैदान में या किसी पार्क में कोई खेल खेलना

सुझावित कार्यक्रम

- अपने महमानों का अभिनन्दन करें व उन्हें नाम लिखने हेतु बैज दें। आप उन्हें इस समय जलपान दे सकते हैं।
- आप आपस में परिचय करने वाले खेल के साथ या मेहमानों से प्रश्नों के साथ शुरू कर सकते हैं।
- गतिविधियों को प्रारम्भ करें-खेल, बारबीक्यू या कुछ और।
- **आज के संसार में मसीहीयत की सच्चाई** को बतायें (निम्नलिखित 3 में से 1 को विकल्प बनाकर)
- बाद में लोगों से उनके विचार पूछें।

आज के संसार में मसीहीयत की सच्चाई

विकल्प 1: हमारे समूह में जुड़ने तथा परमेश्वर के बारे में सीखने का आमन्त्रण

- अपने हाथों को बढ़ाकर लोगों को टिप्पणी कार्ड दें। इस शाम के बारे में लोगों के विचारों को बताने के लिए कहें।
- यदि वे समूह का हिस्सा बनना चाहते हैं तो खास रूप से उन्हें गोले में निशान लगाने को कहें।
- लोगों से कहें कि समूह में नियमित रूप से आने के लिए उनका स्वागत है। स्थान, समय, दिनाँक को स्पष्ट करें। जो लोग दूसरों को साथ लेकर आये हैं उन्हें लोगों को लाने व छोड़ने का प्रस्ताव रखने के लिए उत्साहित करें।
- उन्हें बतायें कि हम परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्धों की वृद्धि करने में सहायता हेतु सदैव तैयार व उपलब्ध हैं।
- उनको छोड़ने से पूर्व उनसे कार्ड वापस ले लें। (ध्यान दें, जब तक सारे मेहमान चले नहीं जाते, तब तक कार्डों को न देखें)
- उनसे अपने आप जाकर कॉफी व बिस्कुट इत्यादि ग्रहण करने के लिए कहें तथा पार्टी का माहौल सहज बनाये रखें।

विकल्प 2: सुसमाचार प्रचार का तरीका

- समूह को एक साथ इकट्ठा करने के पश्चात् अगुवा माहौल को **'क्या तुम व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को जानना चाहोगे?'** पुस्तिका इस्तेमाल करते हुए बदले। अगुवा कहेगा, ***''हम लोग प्रसन्न हैं कि आज की शाम आप हमारे साथ हैं और हम आनन्द मनाने जा रहे हैं। हमारे छोटे समूह में, हम सीख रहे थे कि हम परमेश्वर के साथ किस तरह एक अर्थपूर्ण जीवन बिता सकते हैं। अब मैं आपके सामने उन बातों का निचोड़ प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, जो मैं विश्वास हूँ और आपको बताना चाहता हूँ कि कैसे आप भी ठीक इसी प्रकार का सम्बन्ध बना सकते हैं।''*** निश्चित करें कि प्रत्येक के पास (प्रत्येक मसीही समेत) एक पुस्तक ज़रूर हो और उन्हें उत्साहित करें कि वह आपके साथ पृष्ठ 10 पर लिखी प्रार्थना को बिना टिप्पणी करे पढ़ें।
जब आप इस प्रार्थना को पढ़ चुकें जो लोग मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करना चाहते हैं उन्हें आमन्त्रित करें तथा उनसे आपके पीछे पुस्तिका में से एक एक वाक्य को दोहराने के लिए कहें।
- प्रत्येक जन को टिप्पणी/सुझाव कार्ड दें **(प्रत्येक मसीही समेत)**। उस संध्या के ऊपर उन लोगों से अपने विचार व्यक्त करने के लिए कहें। उनसे किसी भी बॉक्स पर जो उनसे मेल खाता है निशान लगाने को कहें खास तौर पर जब उन्होंने मसीह को ग्रहण किया हो या अगली सभा में आने के लिए इच्छुक हों।
- उनसे कहें कि आप नियमित रूप से अपने समूह में आने के लिए उनका स्वागत करते हैं। स्थान, समय, दिनाँक को स्पष्ट करें। जो लोग अपने साथ मित्रों को लेकर आये हैं उन्हें मित्रों को अगली सभा में लाने व छोड़ने के लिए उत्साहित करें।
- उन्हें बतायें कि हम परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्धों की वृद्धि करने में सहायता हेतु सदैव तैयार व उपलब्ध हैं।
- उनको छोड़ने से पूर्व उनसे कार्ड वापस ले लें। (ध्यान दें, जब तक सारे मेहमान चले नहीं जाते, तब तक कार्डों को न देखें।)
- उनसे अपने आप कॉफी व बिस्कुट ग्रहण करने को कहें, तथा पार्टी का माहौल सहज बनाये रखें।

विकल्प 3: व्यक्तिगत गवाही व सुसमाचार प्रस्तुतीकरण

- उस व्यक्ति का परिचय करायें जो आकर अपने जीवन की गवाही बाँटेगा, कि उन्होंने परमेश्वर के साथ प्रभावशाली सम्बन्ध कैसे बनाया।
- जो व्यक्ति गवाही देने जा रहा है वह पूर्ण रूप से तैयार होना चाहिए तथा 10 मिनट का समय लें।
- गवाही के अन्त में वह या कोई और आकर उस स्थिति को **'पुस्तिका क्या तुम परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप में जानना चाहोगे?'** का इस्तेमाल करते हुए स्थिति परिवर्तन करने तथा सुसमाचार प्रस्तुत करें। वह यह कहने के द्वारा गवाही से प्रचार की ओर जा सकते हैं कि **मैं (हमने) आपके साथ अपने उन अनुभवों को बाँटा, कि कैसे मैं परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सका। और अब मैं आपको बताना चाहूँगा कि कैसे आप ठीक इसी प्रकार का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। इस बात को निश्चित करें कि (प्रत्येक मसीही समेत)** प्रत्येक व्यक्ति के पास वह पुस्तिका हो तथा उन्हें तब तक बिना टीका टिप्पणी करे अन्त तक उस पुस्तक को पढ़ने के लिए कहें, जब तक कि वह पृष्ठ 10 तक न पहुँच जाए।

उस प्रार्थना को पढ़ने के पश्चात, जो लोग यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करना चाहते हैं उन्हें आमन्त्रित करें तथा उनको आपके साथ एक-एक वाक्य कर प्रार्थना को दोहराने के लिए कहें।

- प्रत्येक जन को टिप्पणी कार्ड दें (**सारे मसीही समेत**)। उस शाम के बारे में उनसे अपने विचार लिखने को कहें। जिस वाक्य की बातें उनके जीवन में सत्य हैं उसके बॉक्स पर निशान लगाने के लिए कहें, विशेषकर जब उन्होंने यीशु को स्वीकार किया हो या वह आपके समूह में जुड़ने के इच्छुक हैं।
- उनसे कहें कि नियमित रूप से आपके समूह में आने के लिए उनका स्वागत है। स्थान, दिनाँक, समय की स्पष्ट जानकारी दें। जो लोग अपने साथ में मेहमानों को लेकर आये हैं, उनसे मेहमानों को अगली सभा में लाने और वापस ले जाने के लिए आग्रह करें।
- उन्हें बतायें कि हम परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्धों में वृद्धि करने में सहायता हेतु सदैव तैयार व उपलब्ध हैं।
- उनको छोड़ने से पूर्व, उनसे कार्ड वापस ले लें। (ध्यान दें: जब तक मेहमान चे नहीं जाते कार्डों को न देखें)
- मेहमानों से स्वयं कॉफी तथा बिस्कुट ग्रहण करने के लिए कहें, तथा पार्टी का वातावरण सहज बनाये रखें।

समारोह के पश्चात्

- जिन लोगों ने मसीह को ग्रहण किया है उन्हें समूह के किसी सदस्य से परिचित करायें जो उन्हें **सामर्थी आधार** की शिक्षाओं में अध्ययन करा सकें।

यह समय विश्वास का अनुभव करने का समय होगा। परमेश्वर आपके विश्वास का आदर करेगा।

यदि आपके पास कोई प्रश्न है और आपको सहायता की आवश्यकता है तो पासबान या कोच से सम्पर्क कर सकते हैं।

आयोजकों के लिए सुझाव व निर्देशिका

प्रत्येक दम्पत्ति इस संसार को परिवर्तित करने के लिए थोड़ी बहुत मदद कर सकता है।

1. जितने लोग आपके कमरे में आराम से बैठ सकते हैं उसके तीन गुना लोगों को आमन्त्रित करें।
2. अपनी जान पहचान के प्रत्येक क्षेत्र से लोगों को बुलायें।
   क. पड़ोसी-मित्र
   ख. क्लब के सदस्य को
   ग. व्यापार जगत या कार्यालय में जानने वालों को

3. आमन्त्रण, तैयारी, व सेवा करते समय सह-मेजबान के रूप में एक साथी को ज़रूर रखें।
4. एक आकर्षक आमन्त्रण का चुनाव करें या निर्माण करें।
   क. 10-14 दिनों पहले ही आमन्त्रण को भेजें।
   ख. आमन्त्रण पत्र में दिनांक, समय, स्थान के साथ निम्न को सम्मिलित करें।
   वेरिवरली के निवासी जिम व तिली 'आज के संसार में मसीहीयत की सच्चाई' पर अपने विचार व्यक्त करेंगे।
5. एक व्यक्तिगत फोन कॉल के साथ ***(उदाहरणः हाय, जॉन, मुझे उम्मीद है कि तुम्हें टॉम र कैथी से आमन्त्रण प्राप्त हो गया होगा)*** आमन्त्रण पत्र भेजें।
6. जैसे ही मेहमान लोग पहुँचते हैं उन्हें जलपान करायें।
7. मेहमानों के लिए नाम वाला बिल्ला अवश्य दें।
8. भोजन करते वक्त कोई संगीत पीछे से बजने दें, (चर्च का गीत न हो)
9. असाम्प्रदायिक विषयों पर चर्चा को सरगर्म करें (खेल, फैशन, स्कूल परिवार इत्यादि)
10. कलीसिया की गतिविधियों सम्बन्धित वार्तालाप को नज़रअन्दाज करें, (ऐसा करने से केवल गैर-मसीही अलग होते हैं)।
11. राखदानी उपलब्ध करायें।
12. जिन मसीही भाई बहनों को आपने आमन्त्रित किया है उनको अपने साथ गैर-मसीहीयों को **लाने के लिए कहें**। (जिन लोगों को आपने मेल भेजा है या आमन्त्रण पत्र दिया है)
13. स्त्री और पुरुषों को अलग-अलग बैठानने से बचने के लिये, अपने मसीही मित्रों से एक चक्र बनाने के लिए कहें।
14. जैसे ही वक्ता अपना प्रचार समाप्त कर चुके, पुनः **लोगों को जलपान दें तथा सहज माहौल बनायें।**

सभा का स्वरूप

1. जब मेहमान आते हैं उन्हें जलपान करायें।
   क. उन्हें नामांकन भरने को बैज दें (काले रंग के पैन का प्रयोग करें)।
   ख. एक से दूसरे व्यक्ति के पास जायें।
   ग. असाम्प्रदायिक विषयों पर निरन्तर चर्चा करें।
2. उस शाम के लिए निर्धारित खेल को शुरु करें (लगभग एक से डेढ़ घण्टे के लिए)।
3. भोजन परोसें (स्वयं सेवा को प्राथमिकता दें- इससे लोग चलते फिरते रहेंगे (लगभग 45 मिनट के लिए)।
4. दम्पत्ति छोटी ही बात करें (लगभग 30 मिनट में अपने जीवन की गवाही तथा सुसमाचार पुस्तिका में से)
5. जैसे ही लोगों की चाय या बिस्कुट खत्म हो जाता है उन्हें और चाय और बिस्कुट दें।

- यह मेजबान व वक्ता के लिए एक खास अवसर होता है कि वहलोगों को सहज माहौल में जाने का मौका दें। यह कार्य तुरन्त लोगों के लिए चाय या कॉफी लाकर देने से सम्भव है दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उत्साहित करें।

यह स्वरूप आपको अपने मकसद पर कायम रखने के लिए बनाया गया है (**लचीले होने को तैयार रहें**)।

सभा हेतु आवश्यक सामग्री

- आमन्त्रण पत्र
- अल्प-आहार
- ग्लास या कप
- चाँदी का बर्क
- प्लेट (चाईना की, या पेपर)
- कटोरियां (छोटी, बड़ी)
- राखदानी
- मोमबत्ती व स्टैण्ड
- गोल मेज़
- खेल सामग्री / पेन्सिल
- डोंगा/चम्मच/कांटें/प्लेट

- सुसमाचार पुस्तिका
- टिप्पणी पत्र

व्यंजन सूची
- बारबीक्यू
- आलू के चिप्स
- ब्रैड पकौड़ा
- कोल्ड प्लेट

व्यंजन सम्बन्धी सामग्री की सूची
- मीट/सॉस
- टमाटर/सलाद/डबल रोटी/क्रीम
- सलाद/टोस्ट/जैली
- सलाद सजावट/अचार
- बन्स/ब्रैड/मक्खन/लहसन
- कॉफी/चाय/क्रीम/चीनी

ध्यान दें: अगले दो पृष्ठों को आवश्यकतानुसार फोटोस्टेट कॉपी करा सकते हैं।

हमारे सिीही मित्रों के लिए कुछ सलाह

हो सकता है कि आप का कोई ऐसा गैर-मसीही मित्र, पड़ोसी, क्लब सदस्य या व्यापारिक साथी हो जिसके साथ आप ऐसा गहन सम्बन्ध बनाना चाहें कि जिसके साथ आप एक आनन्दमयी संध्या का मज़ा उठा सकें जहाँ पर वह एक मेजबान परिवार द्वारा थोड़े समय के लिए स्पष्ट रूप से:

युगलों (स्त्रियों, पुरुषों, विद्यार्थियों, युवकों) के संसार में मसीहीयत की सच्चाई को प्रचार किया जाये।

यदि ऐसा है तो-

तो क्यों न निम्न बातों को करने के द्वारा घनिष्ट सम्बन्ध बनाया जाये:

1. भोजन करते समय या भोजन के बाद उनसे बातें करें (होने दें कि आपकी बातचीत असाम्प्रदायिक मुद्दों तक सीमित रहे जैसे- खेल, फैशन, आदतों, स्कूल के मसलों पर, स्थानीय मुद्दों पर वार्ता आदि)

फिर-

2. उनको उनके पसन्दीदा खेल में जाने के लिए आमन्त्रि करें (जैसे- हॉकी, टैनिस, फुटबॉल, बैसबाल, गौल्फ, गेंदबाजी आदि) उनका टिकट स्वयं खरीदें तथा उन्हें घर से लाने जायें।

या

3. उनकी आदतों या बच्चों में रुचि इस हद तक दिखायें, जिसे एक युगल (जोड़े) के रूप में बात करने के लिए आपको आवश्यक समय मिल सके। (कुछ पकाने में सहायता करें; जिस भी कार्य में सम्भव हो सहायता करें, उदाहरण: बच्चों की देखभाल)

यह सारी बातें आपके प्रेम को प्रगट करतीं तथा रास्ता बनाती हैं

जैसे ऊपर बताया गया है उस प्रकार की अनौपचारिक सभा में आने के लिए आपका आमन्त्रण स्वीकार करने के लिए, मित्र होने के नाते, आप उनके साथ सुसमाचार बाँटना चाहेंगे।

गैर-मसीही मित्र को आमन्त्रि करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. व्यक्तिगत लिखा हुआ आमन्त्रण पत्र भेजें।
2. आप कुछ इस प्रकार लिख सकते हैं: ***''हमारे मित्रगण एक समारोह कर रहे हैं (सुसमाचार प्रचार सभा नहीं)। वर्णन करें कि यह समारोह किस प्रकार का है, बारबीक्यू, तैराकी पार्टी इत्यादि। उन्होंने कहा है कि अगर आप चाहें तो एक परिवार को अपने साथ ला सकते हैं। हम आपको अपने खास मेहमान के रूप में बुलाना चाहते हैं। और वहाँ बिल और जैनी, आज के संसार में मसीहीयत की सच्चाई के बारे में, अपने विचार भी व्यक्त करेंगे। अगर आप आना चाहें तो हमें शीघ्र सूचित करें, ताकि हम मेज़बानों को आपके आने की खबर कर सकें।''***
3. यदि वह आ रहे हैं तो **किसी खास जगह से उन्हें अपने साथ लाने का प्रबन्ध करें** (यह बहुत ही आवश्यक है)
4. जब आप पार्टी या समारोह में पहुँचते हैं तो उनके साथ ही रहें तथा ज़्यादा से ज़्यादा लोगों से उनकी मुलाकात करवायें।
5. एक बार फिर असाम्प्रदायिक मुद्दे पर बात करें।
6. कलीसिया की गतिविधियों पर चर्चा करने से बचें (इससे आपके मेहमान नज़रअन्दाज़ हो जायेंगे)।

टिप्पणी पत्र

नामः
पताः

शहरः
गाँव/नगरः
पिन कोड
टिप्पणीः *(एक या दो वाक्यों में बतायें कि यह कार्यक्रम आपको कैसा लगा)*

- ☐ मैंने आज प्रार्थना करके यीशु मसीह को अपने हृदय में आमन्त्रि किया।
- ☐ मैं यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने के बारे में और अधिक जानना चाहूँगा।
- ☐ मैं आपके घरेलू समूह का हिस्सा बनना पसन्द करूँगा।

टिप्पणी पत्र

नामः
पताः

शहरः
गाँव/नगरः
पिन कोड
टिप्पणीः *(एक या दो वाक्यों में बतायें कि यह कार्यक्रम आपको कैसा लगा)*

- ☐ मैंने आज प्रार्थना करके यीशु मसीह को अपने हृदय में आमन्त्रि किया।
- ☐ मैं यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने के बारे में और अधिक जानना चाहूँगा।
- ☐ मैं आपके घरेलू समूह का हिस्सा बनना पसन्द करूँगा।

टिप्पणी पत्र

नामः
पताः

शहरः
गाँव/नगरः
पिन कोड
टिप्पणीः *(एक या दो वाक्यों में बतायें कि यह कार्यक्रम आपको कैसा लगा)*

- ☐ मैंने आज प्रार्थना करके यीशु मसीह को अपने हृदय में आमन्त्रि किया।
- ☐ मैं यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने के बारे में और अधिक जानना चाहूँगा।
- ☐ मैं आपके घरेलू समूह का हिस्सा बनना पसन्द करूँगा।

टिप्पणी पत्र

नामः
पताः

शहरः
गाँव/नगरः
पिन कोड
टिप्पणीः *(एक या दो वाक्यों में बतायें कि यह कार्यक्रम आपको कैसा लगा)*

- ☐ मैंने आज प्रार्थना करके यीशु मसीह को अपने हृदय में आमन्त्रि किया।
- ☐ मैं यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने के बारे में और अधिक जानना चाहूँगा।
- ☐ मैं आपके घरेलू समूह का हिस्सा बनना पसन्द करूँगा।

अगुवाई करने वाला अगुवा

सत्र छः

अपने प्रशिक्षक व अगुवे से विचार-विमर्श करने के उपरान्त निशान (✓) लगायें।

अपने अगुवे के समूह से मिलने से पूर्व तैयारीः

❑ 1. **नेतृत्व के आधार** को पढ़ें। इस पर चर्चा हेतु तैयार रहें।

❑ 2. **सम्बन्धों में एक नई एकता** का अध्ययन करें। अपने अगुवों के समूह के साथ चर्चा करने हेतु तैयार रहें।

❑ 3. **अपने समूह व सेवकाई की ज़िम्मेदारी के एक सक्रिय भागीदार बनना,** पढ़ें। अपने अगुवाई के समूह के साथ चर्चा हेतु तैयार रहें।

❑ 4. निम्नलिखित अभिलेख को पूर्ण करें।

अपने अगुवों के समूह के साथ भरा जायेः

❑ 5. प्रत्येक जन अपनी गवाही व प्रार्थना के विषय को बाँटें। समूह के सदस्यों की जरूरतों पर चर्चा करें।

❑ 6. उपरोक्त बिन्दू 1-4 तक पर चर्चा करें व निशान (✓) लगायें।

आपके जीवन समूह की अगुवाई करने में आपको सामर्थी बनानाः

❑ 7. हम मसीह में क्या हैं, पर आधारित होकर, क्या हमारा समूह एकता को प्रगट करता है? हमें अपने सम्बन्धों को सुधारने के लिए क्या करने की आवश्यकता है?

मेरे साथ प्रार्थना करें, ताकि मैं

❑ 8. आपके समूह में सुधार लाने के लिए आपको किन 14 सिद्धान्तों का पालन करने की आवश्यकता पड़ेगी? आप क्या करने की योजना बना रहे हैं?

मैं सोच रहा हूँ कि ______________________________

____

आपके जीवन समूह पर अभिलेख:

❑ 9. __________ नियमित उपस्थिति

❑ 10. __________ पिछले माह नये आगन्तुक

नाम ______________________________

पता ______________________________

____

❑ 11. एक से एक को प्रशिक्षण में लोग :

सामर्थी आधार __________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

__________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी शिष्यता __________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

__________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

सामर्थी वक्तव्य __________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

__________ को __________ प्रशिक्षण दे रहा है।

❑ 12. __________ लोगों ने समूह के सदस्यों द्वारा मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया है।

प्रार्थना और समापन:

❑ 13. एक दूसरे तथा समूह के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें।

❑ 14. यदि आप आगे चलकर प्रशिक्षक होना चाहते हैं तो, एक **विजयी दल-प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण तथा स्रोत** के प्रथम सत्र का अध्ययन करें।

❑ 15. विजयी दल के प्रथम सत्र हेतु दिनाँक __________ समय __________ स्थान __________ निर्धारित करें।

अगुवाई के आधारभूत सिद्धान्त

इससे पहले कि अगुवे सेवकाई के चरित्र में कोई प्रभाव डालें उन्हें अपने चारित्रिक विकास पर ध्यान देना चाहिए।

अगुवे की मन की धारणा

- लोग ही सेवकाई हैं (सेवकाई सदैव सम्बन्धों से आगे बढ़ती है)
- हमारा लक्ष्य एक परिवर्तित जीवन है।
- हम जीवन परिवर्तन हेतु पवित्र आत्मा पर निर्भर हैं।

एक अगुवे के प्रारम्भिक लक्ष्य

- परिवर्तित जीवनों के लिए दर्शन व लक्ष्य प्रदान करना।
- लोगों के सम्मुख परिवर्तित जीवनों की कहानी रखना।
- व्यक्तिगत सेवकाई के गुणों में स्वयं को तैयार करना।
- नवअगुवों के निर्माण द्वारा पुनः उत्पादन करना।
- अगुवों का प्रशिक्षण करना।

अगुवे का चरित्र

- पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर परमेश्वर के मिशन को पूरा करने में अपने वरदानों का इस्तेमाल करके परमेश्वर की महिमा की खोज करना।
- मिशन के प्रति दूसरों में एक चाहत को प्रज्वलित करना तथा उनके वरदानों व लगन को परमेश्वर के मिशन को पूरा करने में इस्तेमाल करने में उनकी सहायता करना।
- ज़िम्मेदारियों को ग्रहण करता, अधिकार प्राप्त करता, उत्तरदायित्व का स्वागत करता है।

अगुवों से अपेक्षाएं

वफादार- दूसरों के, समूह व दल के, अधिकारियों के प्रति।
जिज्ञासु- दूसरों की सेवा व जीवन में सफलता देखने के।
स्वभाव- शिक्षा प्राप्त करने वाला, सकारात्मक, सहायक।
समर्पित- मसीह, एक दूसरे के प्रति, तथा सेवकाई के प्रति।
उत्साहित करने वाला- दूसरों के स्वप्नों में विश्वास करने वाला।
वास्तविक- पारदर्शी व विश्वसनीय होने का इच्छुक।

नेतृत्व = प्रभाव

रिश्तों में एक नयी एकता

सलाह देते समय आप अधिकतर यह सुनते हैं, *''मैं उसे और अधिक प्रेम नहीं कर सकता!''* मैं हमेशा कहता हूँ, *''और अधिक?''*, फिर *''क्या पहले कभी आप एक दूसरे से प्रेम करते थे?''* ज़्यादातर मामलों में यह जवाब बिल्कुल *'हाँ'* ही होगा। यह कैसे हुआ कि जो लोग कभी एक दूसरे से प्रेम किया करते थे आज नफरत करते हैं यहाँ तक कि एक दूसरे की शक्ल देखना भी पसन्द नहीं करते? क्या एक दिन सुबह वह उठे और अचानक सब कुछ बदल गया? नहीं। किसी भी वार्तालाप या सम्बन्ध में हम एक समय पर एक कदम या तो नज़दीक आते हैं या दूर चले जाते हैं। इसकी तुलना किसी सीढ़ी पर चढ़ने से की जा सकती है। आपका सही निर्णय तथा उसके साथ संगत कार्य, दूसरों के साथ आपके सम्बन्ध को नयी ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। इसके विपरीत आपके गलत निर्णय व कार्य आपको पतन की ओर ले जाते हैं। आगे की दिशा में अग्रसर होने का अर्थ है कि हम अपनी जीवन की सफलताओं को एक दूसरे के साथ बाँटते हैं। नीचे की ओर आने का अर्थ है कि हम अपने आपको ऐसे स्थान पर आकर सीमित कर देते हैं जहाँ से हम एक दूसरे के साथ कोई बातचीत नहीं कर सकते। *''परन्तु''* वह कहते हैं, *''मैं प्रेम नहीं कर सकता...''*। बिल्कुल ठीक, *''मैं''* कभी भी पूर्ण प्रेम नहीं कर सकता। याद रखें *''मैं नहीं परन्तु मसीह!''* अहम पूछे जाने वाला प्रश्न यह है कि *''क्या मसीह उस व्यक्ति को प्रेम कर सकता है?''* जी हाँ। अब हम असल मुद्दे तक पहुँचे हैं। **क्या मैं मसीह को मुझमें होकर उस व्यक्ति को प्रेम करने दूँगा?**

मसीह में एक सम्पूर्ण एकता है

यदि आपने मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है तो आप 100 फीसदी मसीह में हैं, परन्तु यदि आप इस तथ्य को महसूस नहीं करते तो आप सदैव **मसीह में** बने रहने के लिए संघर्ष करेंगे। आपके कार्य आपकी समझ के परिणाम होंगे। जो कुछ आपको मसीह, उसकी इच्छाओं और उसके मार्गों के बारे में पता है उन्हीं विचारों पर आधारित होकर आप निर्णय लेंगे कि कौन सी चीज़ें आपको उसके नज़दीक ले जाती हैं। यह बात भली जान पड़ती है परन्तु यह सही नहीं है। यह तो विचारबद्धता है। 1 कुरिन्थियों 1:30 कहता है, *''परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो।''* कुलुस्सियों 2:10 कहता है- *''तुम्हें मसीह में सम्पूर्णता प्राप्त है।''* जो कुछ परमेश्वर ने कहा है विश्वास उसे ग्रहण करता है। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

मसीह में मैं:

1. परमेश्वर की संतान हूँ क्योंकि मैंने नया जन्म पाया है। 1 पतरस 1:23
2. अपने सारे पापों से मुक्त हो गया हूँ। इफिसियों 1:7, इब्रानियों 9:14, कुलुस्सियों 1:14, 1 यूहन्ना 1:9, 2:12
3. एक नई सृष्टि हूँ। 2 कुरिन्थियों 5:17
4. पवित्र आत्मा का मंदिर हूँ। 1 कुरिन्थियों 6:19

5. व्यवस्था के श्रापों से छुटकारा पाया हूँ। 1 पतरस 1:18,19, गलातियों 3:13
6. आशीषित हूँ। व्यवस्थाविवरण 28:1-4, गलातियों 3:9
7. संत हूँ। रोमियों 1:7, 1 कुरिन्थियों 1:2, फिलिप्पियों 1:1
8. पवित्र और उसके सामने दोष रहित हूँ। 1 पतरस 1:16, इफिसियों 1:4
9. चुना हुआ हूँ। कुलुस्सियों 3:12, रोमियों 8:33
10. अंत तक सामर्थ से भरा हुआ हूँ। 1 कुरिन्थियों 1:8
11. मसीह के लहू के द्वारा करीब लाया गया हूँ। इफिसियों 2:13
12. मसीह के द्वारा खरीदा गया हूँ। रोमियों 8:17
13. पवित्र आत्मा के वायदों से मोहर किया गया हूँ। इफिसियों 1:13
14. मसीह यीशु में उसके कामों के द्वारा हूँ। 1 कुरिन्थियों 1:30
15. अपने प्रिय के द्वारा स्वीकार किया गया हूँ। इफिसियों 1:6
16. उसमें पूरा हूँ। कुलुसियों 2:10
17. परमेश्वर से मेल-मिलाप कराया गया हूँ। 2 कुरिन्थियों 5:18
18. परमेश्वर में बुलाया गया हूँ। 2 तीमुथियुस 1:9
19. उसकी बनाई हुई रचनाओं में से पहला फल हूँ। यहूदा 1:18
20. चुना हुआ हूँ। 1 थिस्सलुनीकियों 1:4, इफिसियों 1:4, 1 पतरस 2:9
21. मसीह के घावों से चंगा किया गया हूँ। 1 पतरस 2:24, यशायाह 53:5
22. परमेश्वर के द्वारा प्रेम किया गया हूँ। कुलुस्सियों 3:12, रोमियों 1:7, थिस्सुलुनीकियों 1:4
23. मसीह के साथ परमेश्वर में छुपा हूँ। कुलुस्सियों 3:3

मसीह में मेरे पास:

24. मैंने मिरास प्राप्त की है। इफिसियों 1:11
25. एक आत्मा द्वारा पिता के पास पहुँच है। इफिसियों 2:18

समय समय पर आपको अपने समूह के सदस्यों को इन सच्चाईयों को याद दिलाने की आवश्यकता पड़ेगी तथा उनके टूटे सम्बन्ध को जोड़ने में सहायता करनी पड़ेगी। वह **एक है** अत: जो वे हैं उसे बनने में उनकी सहायता करें।

अपने समूह में किस तरह उत्तम भागीदार बनें

उत्तम से उत्तम योजना व प्रार्थनाओं के बावजूद भी कई अनापेक्षित घटनाएं हो सकती हैं। प्रत्येक परिस्थिति में सबसे ज्यादा याद रखने वाली बात यह है कि हम सकारात्मक रवैय्या बनाये रखें और जो कार्य परमेश्वर यहाँ रहने वाले लोगों के जीवन में कर रहा है उसे लेकर सर्वदा उत्साहित रहें। प्रत्येक परिस्थिति में धीरज के साथ व्यवहार करने तथा लचीलेपन का अभ्यास करने का स्वयं को अवसर दें। पौलुस ने अपने जीवन में ज़्यादातर उन सारी परिस्थितियों का अनुभव किया जो शायद हम लोग भी करें, परन्तु उसने अपने शिष्यों के जीवन को लेकर परमेश्वर पर भरोसा करना तथा इन अनुभवों से मिलने वाले गुणों के प्रति परमेश्वर का धन्यवाद देना सीख लिया जो उसे इन परिस्थितियों में मिल रहे थे। अत: इन अकस्मात समस्याओं से न डरें। वरन् और अधिक प्रभावशाली बनने के लिए इन्हें चुनौती के रूप में स्वीकार करें। आपके जीवन समूह के सदस्य **जितनी शिक्षाएं पुस्तकों से प्राप्त करेंगे उतनी ही आपके जीवन से भी करेंगे।** (पढ़ें रोमियों 5:3-5)

1. **यदि केवल एक ही व्यक्ति आये तो क्या होगा ?** इस समय को परमेश्वर की ओर से खास समय मानकर चलें, जो उसने इस व्यक्ति को पहचानने हेतु आपको दिया है। ध्यान रहे कि जो लोग नहीं आये हैं उनके प्रति नकारात्मक बातें न बोलें। उस व्यक्ति के साथ अध्ययन करने, बाँटने, योजना बनाने तथा प्रार्थना करने में अपना समय बितायें।

2. **यदि लोग 45 मिनट देरी से आयें तो क्या करें ?** फटाफट उन्हें संक्षेप में बतायें कि आप अभी तक क्या कर रहे थे और उन्हें भी शामिल होने की अनुमति दें।

3. **जब लोग विषय से अलग बातें या मेल न खाती हुई बातें करें तो क्या करें ?** सदैव पारदर्शी बनें। इस प्रकार से एक वाक्य कहें- *''मेरे ख्याल से हम किसी और विषय पर आ गये हैं। क्यों न हम समय का ख्याल करते हुए पुन: ... विषय पर वापस चलें।''* यदि जिस विषय पर वह चर्चा करना चाहते हैं वह सारे लोगों के लिए महत्वपूर्ण है तथा सब इसमें रुचि ले रहे हैं तो इस विषय को लिख लें, और अगली बार मिलने पर चर्चा करने की सहमति करें।

4. **यदि कोई ज़्यादा ही बात करता हो तो क्या करें ?** यह समस्या सुलझाना आसान नहीं है परन्तु अगुवा इस समस्या को दूसरे से पूछने के द्वारा हल कर सकता है, ***''जॉन तुम इस विषय पर क्या सोचते हो ?''*** किसी ऐसे समूह के सदस्य को चुनें जिसमें जवाब देने का भरोसा हो। परन्तु फिर भी यदि वह समस्या बढ़ती हुई नजर आती है तो उस व्यक्ति को अलग ले जाकर व्यक्तिगत रूप में बातें करके कहें कि आप जो कह रहे हैं/रही हैं, परन्तु समूह में और भी सदस्य हैं जिन्हें अपनी बातें रखने का अवसर मिलना चाहिए। शायद आप उनसे कहें कि हम किसी शान्त मुद्दे पर चर्चा कर सकते हैं।

5. **यदि कोई गलत जवाब देता है तब क्या करें ?** स्पष्ट रहें कि उस गलत जवाब को आलिंगन न करें, परन्तु उसी सवाल को किसी दूसरे व्यक्ति से पूछें- ***''यह तो बड़ा ही रुचिकर है! क्या कोई और जन इस विषय पर कुछ और कहना चाहता है ?''*** या ***''क्या कोई बाइबल का वचन या अनुच्छेद है जो हमारी इस विषय पर सहायता कर सकता है ?''***

6. **क्या करें यदि किसी का प्रश्न या व्यवहार, अनुचित हो ?** हमें कभी भी असाधारण व्यवहार या वाक्यों से विचलित नहीं होना चाहिए। हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि हमारा प्राथमिक कर्तव्य बना उद्धार पाये हुओं व हमारे पड़ोसियों तक प्रभु का सुसमाचार सुनाना व उसका प्रेम **ज़ाहिर करना** है। वे अधिकतर अकेले व भ्रमित होते हैं, हमें उनकी सहायता करनी है ताकि वह (1 कुरिन्थियों 15:3-5)) बाइबल के मुख्य संदेश को देख सकें...और जो कोई इसे जानना चाहे वह इसे समझ सके। होने दें कि वह हममें परमेश्वर के एक तरफा प्रेम को व ग्रहण किये जाने को देख सकें।

7. **क्या करें यदि कोई जन सदैव अपने और अपनी समस्याओं के बारे में ही बोलता है ?** अगुवे का उस व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत रूप से बात करना काफी रहेगा। उस व्यक्ति को वचन द्वारा उसकी (स्त्री/पुरुष) समस्या का समाधान दिखाना अति सहायक होगा। उसे शायद अतिरिक्त सहायता की भी ज़रूरत पड़े, जिसके लिए पासबान सलाह देंगे। हो सकता है कि उस व्यक्ति ने शायद यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता व परमेश्वर के रूप में न ग्रहण किया हो और उसे केवल अपने तथा दूसरों के प्रयासों पर ही भरोसा हो।

8. **क्या करें यदि किसी व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति या चर्च को लेकर नकारात्मक स्वभाव हो जिसके परिणामस्वरूप बहुत सी बुराईयां उत्पन्न होती हैं ?** अगुवे के उत्साहवर्द्धक, सकारात्मक स्वभाव का उसके समूह के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। नकारात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति से जल्द ही परन्तु व्यक्तिगत रूप में बातचीत करनी चाहिए। अगुवे को उस व्यक्ति को सलाह देनी चाहिए कि यदि उसके हृदय में किसी के प्रति कुछ कड़वाहट है, तो उसे प्रार्थना करनी तथा अपने हृदय की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए (मत्ती 7:3-5)। उसके पश्चात् भी यदि वह व्यक्ति फिर भी यह सोचता है कि कोई समस्या है तो उसे सीधे दूसरे व्यक्ति के पास जाकर उस मसले पर बातचीत कर लेनी चाहिए (मत्ती 18:15-17)।

9. **क्या करें यदि कोई बहस का मुद्दा ले आता है ?** बहस के मुद्दों का सामना करने से कभी न डरें, परन्तु इस बात का निश्चय करें कि समूह को यह ज्ञान हो कि अन्तिम अधिकारी परमेश्वर का वचन है। प्रश्नों के जवाब हेतु वचन को देखें। अगुवा उस मुद्दे पर किसी व्यक्ति को खोजबीन करने तथा एक हफ्ते बाद आकर लेखा देने की ज़िम्मेदारी दे सकता है, परन्तु वह यह ध्यान रखें कि उसे भी उस विषय पर अध्ययन करना है ताकि उस विषय पर चर्चा हेतु तैयार हो सके।

10. **यदि कोई व्यक्ति पिछले सप्ताह की गयी चर्चा के सुझावों का अपने जीवन में पालन नहीं करता, तब क्या करें ?** अगुवे का अपना उदाहरण महत्वपूर्ण है। अगुवे के दिये जाने वाले निर्देश विवेकशील, तथा लक्ष्य को प्राप्त करने वाले सकारात्मक कदम होने चाहिए, जो उनसे कहें कि वह इन बातों को इस हफ्ते अपने जीवन में इस्तेमाल करें। शिक्षा देते समय अगुवा बताये कि किस प्रकार उसने पिछले सप्ताह की शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू किया।

11. **यदि कोई सामान्यता में बात करे तब क्या करें ?** उस मुद्दे को जमीन तक नीचे लाने के लिए, पूछें, ***''क्या आप हमें इस विषय पर कोई विशेष उदाहरण दे सकते हैं ? आपका सामान्य विचार अच्छा है, परन्तु मैं नहीं सोचता कि इसे और ज्यादा स्पष्ट किया जा सकता है। क्या कोई जन इस विषय पर कुछ और जानता है...।''***

12. **मान लीजिये कि कोई व्यक्ति सूचित किया गया सदस्य है परन्तु वह इस प्रकार की चर्चा में आने से डरता है तो क्या करें ?** उस व्यक्ति को उस मसले से दूर रखने के लिए कुछ इस तरह कहें- ***''सैली कुछ समय के लिए यूरोप गयी हुई थी। मान लीजिए कि हम उसे पूछें कि क्या आपने ऐसा देखा है तो ....।''***

13. **यदि कोई व्यक्ति गैर-ज़िम्मेदाराना या नकारात्मक वाक्य बोलता है तब क्या करें ?** उस पर या उसकी बातों पर न बरस पड़ें। इसे एक अवसर मानकर, उसे उसकी बढ़ने की ज़रूरत बतायें, और अपनी वृद्धि के अनुभवों को उसके साथ बाँटें। उदारण: ***''मुझे बाइबल से कुछ भी प्राप्त नहीं होता है''।*** आपका जवाब- ***''मुझे भी इससे कुछ प्राप्त नहीं हुआ जब तक किसी ने मुझे यह रास्ता नहीं बताया था। शायद यह तरीका तुम्हारी सहायता कर सके।''***

14. **यदि किसी की दूसरे व्यक्ति से गर्मागर्मी होना शुरु हो जाये तब क्या करें ?** इस तरह कहें: ***''मेरे विचार से हम सभी जानते हैं कि जोन्स और स्मिथ का इस मुद्दे पर क्या विचार है। अब कौन है जो इस मुद्दे पर और अधिक बहस करना चाहता है ?''***

सेवकाई की ज़िम्मेदारियाँ

अवसर/जरूरत	**छोटे समूह के अगुवे**	**प्रशिक्षक/पूरनिये/ सहकार्यकर्ता**	**अन्य**
मृत्यु (परिवार में)	सहायता, प्रार्थना, भोजन अन्य सहायता	सूचित करना, फोन करना, कार्ड भेजना, मिलने जाना	सहायता का दल
जन्म	अस्पताल जाना	सूचित करना, फोन पर मुबारकबाद देना	
आर्थिक संकट	सुनना, प्रार्थना, सामुहिक सलाह	सलाहकार के साथ मिलकर रहना	
दुर्घटना, बिमारी, चीर-फाड़	मिलने जाना, प्रार्थना व्यवहारिक मदद	सूचित करना, फोन करना	
गतियुक्त	सहायता, भोजन देना		
आत्मिक संकट या बंद्धन या दुर्वचन कहने वाला	सामुहिक मदद, प्रार्थना, सभा के उपरान्त	सलाह लेना	उचित सहायक समूह
सार शोषण	सहायक समूह	उचित समूह या संगठन की ओर दिशा दिखाएं	12 कदमों का कार्यक्रम, आदतों से आज़ादी समूह
वैवाहिक कष्ट	सुने, कहें, प्रार्थना करें, बाद में देखभाल करें	परामर्शदाता, जिस क्षेत्र में ज़रूरत है हवाला देता है	विवाह परामर्शदाता के पास जाने की सलाह
उपाधि प्राप्ति, वर्षगांठ, आदर का उपलक्ष्य	कार्ड भेजें, आनन्द मनायें	बधाई दें	
परिवर्तन की चाह	सुसमाचार सुनायें, बाद में देखभाल तथा आगे शिक्षा देने हेतु किसी व्यक्ति को नियुक्त करें	मान्यता दें	
बपतिस्मा व सदस्यता	उन्हें बपतिस्मा व सदस्यता की कक्षाओं में बैठने के लिए उत्साहित करें	बपतिस्मा व सदस्यता सम्बन्धी शिक्षा के लिए नियन्त्रि कक्षाएं रखें	
व्यक्तिगत वृद्धि/सेवा की इच्छा	नव अगुवों के लिए वरदानों को पहचानना, एक से एक को शिष्यता की आवश्यकता है	सलाह मशवरा करें, सेवकाई में अगुवे के खास विकास हेतु स्थान प्रदान करें।	निरंतर चलने वाला अगुवे का प्रशिक्षण

प्रशिक्षक का समर्पण-पत्र

मैं ________________' परमेश्वर के सम्मुख मसीह व उसकी कलीसिया की सेवा करने का समर्पण करता हूँ। मैं सेवक अगुवों के समान अपने चेलों का ख्याल रखूँगा व प्रेम से संसार तक सुसमाचार पहुँचाऊँगा।

पता: ________________

________________ फोन: ________________

ई-मेल: ________________

यदि मैं अपनी कलीसिया के लिए एक प्रशिक्षक नियुक्त होता हूँ तो मैं समर्पण करता हूँ कि-

________ प्रतिदिन प्रार्थना करूँगा,

________ बाइबल के अनुसार विश्वास में जीऊँगा,

________ पवित्र आत्मा को अपने जीवन पर नियन्त्रण दूँगा,

________ निरन्तर प्रभु का कार्य करूँगा,

________ कलीसिया व अगुवों के प्रति वफादार रहूँगा,

________ नियमित रूप से अगुवों की सभा व प्रशिक्षण में भाग लूँगा।

उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

____

ने सफलतापूर्वक

LIFE GROUP LEADER TRAINING

जीवन समूह अगुवे का प्रशिक्षण

दिनाँक ____________ को सम्पन्न किया।

____

प्रशिक्षक